अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञ-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रांति का सन्देशवाहक

सौर श्रावण २४, शक १८७९ सम्पादक: धीरेन्द्र मजूमदार
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति २ आना

ग्रामदान के बाद

स्वतंत्रता के भवन के निर्माण का प्रारंभ बुनियाद से ही करना होगा। हर ग्राम स्वयंपूर्ण ग्रामराज हो, वह अपनी शिक्षा, दीक्षा, आरोग्य और संरक्षण स्वयं ही संभाले, वहाँ का हर नागरिक ग्रामराज्य का समझदार अंग बने, समाज के सारे व्यवहार सत्य और अहिंसा के तत्त्व पर ही आधारित हों, हर स्त्री-पुरुष हृदय से प्रभु का भक्त हो; यह इसके पीछे आकांक्षा है। आज की-सी कच्ची बुनियाद पर ऊपर-ऊपर से बड़ी दीखने वाली पोली समाज-व्यवस्था 'स्वराज्य' में नहीं चल सकती। वह सहयोग और समता पर आधारित एक परिवार ही बनेगा। (It will be an oceanic circle whose centre will be the individual)

('हरिजन' २८-७-'४६) —महात्मा गांधी

वर्ष-३, अंक-४६ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, १६ अगस्त, '५७

आलोचना की मशाल

(दादा धर्माधिकारी)

"जासूसी लालटेन अपने भीतर की तरफ मोड़ो," "अपने अंदर झाँको," सर्वोदय की मनोवृत्ति का मुख्य लक्षण है। "आत्म-आलोचना करो," "अपनी नुक्ताचीनी आप करो," "और सबके सामने करो," साम्यवादी अनुशासन का एक आवश्यक नियम है। लेकिन अक्सर होता ऐसा है कि सर्वोदयनिष्ठ व्यक्ति के लिए वह सिर्फ एक खोखला रस्म रह जाता है और साम्यवादी के लिए जबर्दस्ती का मामला! हमारा ध्यान अपनी कमजोरियों की तरफ शायद ही कभी जाता हो। इसलिए जब कोई हितुआ और विवेकी व्यक्ति हमारी कमियों की और खामियों की तरफ ध्यान दिलाता है, तो उसकी बातों का स्वागत हमें सिर-आँखों से करना चाहिए। आखिर वह हमें कच्ची-पक्की बातें किसलिए सुनाता है? इसीलिए कि उसकी समझ में हम गुमराह हो रहे हैं और अपने सिद्धान्तों की तरफ़ से वफादारी नहीं निबाह रहे हैं। अतः अगर वह सख्त बात कह देता है, तो हमें कुछ चोट तो जरूर लगेगी, लेकिन उसे सह लेना चाहिए, क्योंकि उसमें हमको जगाने की नीयत छिपी हुई है।

हम गाफिल हैं

इधर कुछ दिनों से हमारे कुछ बहुत विचारवान् और लोकहितपरायण मित्रों ने भूमिदान और ग्रामदान-आंदोलन के बारे में ज़रा कड़ी बातें कही हैं। हम लोग कुछ गाफ़िल और आत्मसंतुष्ट तो हैं ही। इसलिए जगाने वाले को कुछ तीव्र उपायों से काम लेना पड़ता है।

सिद्धिवाद और साधनवाद

जो कुछ कहा गया है, उसमें तीन बातें हमारे काम की हैं। पहली बात: सबकी मदद हासिल करने की फिकर में कहीं हम अपनी असलियत न खो दें। "पानी का रंग कैसा? जिसमें मिलाया वैसा!" "पानी का आकार कैसा? जैसा बर्तन हो वैसा!" यह अगर हमारी हालत हुई, तो अनर्थ होगा। इसलिए हमको अपने साधन के विषय में हमेशा सचेत और दृढ़ रहना चाहिए।

साधननिष्ठा हमारा बिल्ला है

हमारे लिए ये वचन बहुत हित के हैं। उनका हम जितना आदर करेंगे, उतना हमारा चित्त शुद्ध होगा और शक्ति बढ़ेगी। आखिर सर्वोदय की विशेषता ही क्या है? यह कि वह साध्य के अनुरूप साधन में निष्ठा रखता है और हर हालत में उस पर डटा रहता है। लेकिन सोचने की बात यह है कि आखिर साधन-निष्ठा और साधन-शुद्धि को परखने की कसौटी क्या है? जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं, वह हमारा मक़सद या साध्य कहलाता है। जो हम हासिल करना चाहते हैं, वह हमारा निशाना या लक्ष्य कहलाता है। हम कहाँ पहुँचना चाहते हैं? हम एक ऐसी अवस्था को पहुँचना चाहते हैं, जहाँ मनुष्य एक-दूसरे के साथ हिलमिल कर रहेंगे और कोई किसीकी हत्या नहीं करेगा, कोई किसीकी दिक्कत या मुसीबत से फ़ायदा नहीं उठायेगा। यह हमारा साध्य है। उस अवस्था को पहुँचने का हमारा जो तरीका है, उसे हम साधन कहते हैं। बहुत खोजबीन और अनुभव के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि जैसा साध्य होगा, वैसा साधन चाहिए। साध्य के मुआफिक साधन हो, यह सिद्धांत जितना सही है, उतना ही यह सिद्धांत भी सही है कि साधन के मुताबिक साध्य प्राप्त होता है। "End justifies the means" का मतलब यह हरगिज नहीं है कि साध्य अच्छा हो, तो उसके लिहाज से भले-बुरे सब साधन शुद्ध हो जाते हैं; बल्कि उसका असली मतलब यह है कि हमारा साध्य जितना आला दर्जे का होगा, उतना ही पवित्र हमारा साधन भी हो। अर्थात् 'जैसा साध्य वैसा साधन,' इस सिद्धांत का दूसरा पहलू है, 'जैसा साधन वैसा साध्य।' सर्वोदय की यह विशेषता है कि वह इस तत्त्व को जानता है और इसीलिए शुद्ध साधन का आग्रह रखता है। साधन-निष्ठा हमारा बिल्ला है।

साध्य-साधन की युगल-जोड़ी

लेकिन शुद्ध साधन कैसे निश्चित किया जाय? यह जड़मूल का सवाल है। उसका एक ही जवाब है कि जो हमारा साध्य होगा, उसके अनुरूप हमारा साध्य होगा। साध्य और साधन में अभेद है, लेकिन साधन की शुद्धता का निश्चय साध्य से होता है, न कि साध्य की उत्तमता का निर्णय साधन से। साधन-निष्ठा में इतना विवेक जागरूकता और सावधानता के लिए आवश्यक है। नहीं तो हम अपने प्रिय साधन को ही या अपनी सुविधा के साधन को ही शुद्ध साधन समझ बैठेंगे।

सिद्धि और साधन का भेद

सिद्धि अलग चीज है और साध्य अलग चीज है। परंतु इतना तो मानना ही होगा कि साध्य की प्राप्ति ही वास्तविक सिद्धि है। इस सिद्धि की प्राप्ति के लिए सारे साधनों का आयोजन होता है। इस सिद्धि की प्राप्ति का सुनिश्चित साधन ही शुद्ध साधन कहलाता है। हाँ, इतना अवश्य है कि साधन-निश्चय के बाद हमारा सारा ध्यान साधन पर ही केंद्रित हो जाना चाहिए, तभी हम उस साधन का प्रयोग सच्ची लगन से और पूरी कोशिश से कर सकेंगे।

जब हम यह कहते हैं कि साध्य अलग है और सिद्धि अलग है, तब हमारा मतलब उस अंतिम सिद्धि से नहीं होता, जिसे हम साध्य की प्राप्ति कहते हैं; बल्कि उन फुटकर लाभों से और सफलताओं से होता है, जिनके फंदे में पड़ कर हम अपने ध्येय से विचलित हो जाते हैं। तो इस अर्थ में सिद्धि सफलता का नाम है। सिद्धि का पुजारी साधन को छोड़ देता है और साध्य को खो देता है। इसलिए जो लोग यह कहते हैं कि हमें सफलता की फिराक में अपने साधन को नहीं छोड़ना चाहिए, वे हमारे हित की बात कहते हैं। उसके लिए हमें उन्हें धन्यवाद देने चाहिए और इस बात की खबरदारी रखनी चाहिए कि ग्राम-दान और भूदान-आंदोलन में चकमाबाजी, दांभिकता और शेखी जैसे दोष न आने पावें। हमारी हानि असफलता से नहीं होगी, बल्कि गलत साधन के प्रयोग से होगी।

तो हमारे लिए इस आलोचना में नसीहत है। अपने साध्य के अनुरूप जो साधन हमने विचारपूर्वक स्थिर किया है, उससे हम तात्कालिक और अल्प सिद्धि के लोभ से न डिगें।

अब सवाल यह है कि क्या दरअसल हम ऐसा कुछ कर रहे हैं? यहाँ सवाल अपनी जाँच-पड़ताल करने का है। दूसरे की आलोचना से रोशनी मिल सकती है।

सर्वोदय की मूल निष्ठा

सर्वोदय में दो मूलभूत श्रद्धाएँ हैं। एक तो यह कि भलाई में बुराई से ज्यादा ताकत होती है और दूसरी यह कि जब तक भलाई से काम होता है, तब तक मनुष्य बुराई का सहारा नहीं लेता। इन दो निष्ठाओं में पुरुषार्थ के बीज हैं। जहाँ पुरुषार्थ है, वहाँ खतरा है ही। पुरुषार्थ का बीज यह है कि हमको अपने साधन की अमोघता में इतना भरोसा है कि जो लोग ग़लत और नापाक तरीकों से काम लेते हैं, वे भी इसकी उत्तमता के कायल होंगे और अपने ग़लत तरीकों को बदलने के

www.vinoba.in

लिए तैयार होंगे। इसमें हमें भरोसा हमारी अपनी कूवत का नहीं है, बल्कि अपने साधन की श्रेष्ठाता का है। जिस साधन ने हमको शक्ति दी और हमारी नीयत सुधारी, वह दूसरों की मति को भी दुरुस्त करेगा, यह हमारा विश्वास है। इसलिए हम किसीसे परहेज नहीं करेंगे। सबको इस साधन को आजमाने के लिए विनयपूर्वक दावत देंगे। गांधी की अहिंसा ने हम निकम्मों की भी हैसियत और दयानत बढ़ायी। यह उनकी विभूति की महिमा तो थी ही, लेकिन उनकी विभूति भी उनके साधन से बनी थी।

सावधानता और परहेजगारी

अगर अहिंसानिष्ठ व्यक्ति को हमेशा यह अंदेशा रहे कि मैं दूसरों के साथ हो जाऊँगा, तो अपना स्वत्व खो दूँगा, तो वह संशयशीलता के भँवरे में गोते खाता रहेगा। सतत सावधानता साधन-निष्ठा का लक्षण है। लेकिन सार्वत्रिक संशयशीलता के कारण अहिंसावादी सबसे बचने की कोशिश करेगा और अपने कवच में कैद हो जायगा। इसलिए यह खतरा उठा कर भी दूसरों को अपने साथ आने की दावत देगा, उनकी सज्जनता में विश्वास करेगा और अपने साधन की शुद्धता सम्हालने के लिए निरंतर जागरूक रहेगा। आज भूदान के प्रमुख सेवकों की यही नीति और यही वृत्ति है।

इस नीति के पीछे प्रत्यक्ष परिस्थिति भी है। अब हिंसात्मक तथा सशस्त्र उपायों से साधारण नागरिक की वक़त और इज्जत कायम करने वाली क्रांति नहीं हो सकती। यह वस्तुस्थिति है। वस्तुस्थिति की दलील कोई नहीं काट सकता। आंतर-राष्ट्रीय क्षेत्र में सह-अस्तित्व के गर्भ से निःशस्त्रीकरण की जरूरत पैदा हुई है। कम्युनिस्ट राज्यों के तौर-तरीकों में जो उलट-फेर हुए और जो कड़ुवे अनुभव हुए, उन सबके कारण उसको अपने साधनों का पुनर्विचार करना पड़ रहा है। कम्यू-निज्म में साधन का आग्रह नहीं है। इसलिए हिंसा और हथियार का भी आग्रह नहीं हो सकता। इसके साथ-साथ उसका यह भी दावा है कि स्थितिवादी और प्रतिक्रांतिवादी तत्त्वों के मुकाबले उसके साधन कम ज़ालिम और कम क्रूरतापूर्ण होंगे। इसका मतलब यह हुआ कि जहाँ मिश्री से बीमारी मिटती हो, वहाँ फिटकरी से काम नहीं लेंगे।

आज की वैज्ञानिक और राजनैतिक परिस्थिति देख कर सशस्त्र क्रांतिवादियों को, आतंकवादियों को और बलप्रयोगवादियों को अपने तरीकों का फिर से विचार करना पड़ रहा है। इत्तेफ़ाक कुछ ऐसा है कि जिन नये तरीकों को अब उन्हें अपनाना होगा, वे आंतरराष्ट्रीय सह-अस्तित्व और मानवीय व्यक्तियों के अन्योन्य सहयोग के मुआफिक होने चाहिए। तात्त्विक दृष्टि से अहिंसात्मक साधन ही शुद्ध साधन हैं। व्यावहारिक दृष्टि से परिस्थिति का रुख उनकी दिशा में मुड़ रहा है। भले साधनों में बुरे साधनों की अपेक्षा ज्याद स्वत्त्व और अधिक गुणकारित्व होता है। ऐसे अनुकूल वातावरण में यदि अहिंसानिष्ठ व्यक्ति अपने साधनों का प्रयोग करने के लिए दूसरों का आवाहन करने में हिचकिचायेंगे, तो मुहूर्त्त चूकेंगे। गांधी के नेतृत्व में दुनिया को यह भी अनुभव हुआ है कि अच्छा साधन बुरे व्यक्तियों को भी अधिक बुरे बनने से बचाता है। प्रतिपक्षी के मन में उनकी सचाई और ईमानदारी के बारे में भरोसा और आदर पैदा करता है। शर्त इतनी ही है कि हमें हार और जीत के गोरखधंधे में नहीं पड़ना चाहिए, अपने मन में यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि हमारी असफलता भी सफलता की एक मंजिल ही होगी।

हमारी भलाई की और एक बात हमारे कृपाशील आलोचकों ने कही है। वह यह कि भूदानवाद एक अलग संप्रदाय बन रहा है। उनका यह डर कहाँ तक वास्तविक है, इसका जवाब हमारी दलीलें नहीं देंगी, हमारी आत्मा का प्रत्यय देगा। हमारे एक तरुण बुद्धिवादी मित्र जो हाल ही में हमसे अलग हुए हैं, अक्सर कहा करते हैं कि सर्वोदय तो कोई 'वाद' नहीं है; लेकिन भूदान एक 'वाद' है। हमको इससे इतना ही सबक लेना चाहिए कि भूदान में 'वाद' की बू न आने पावे। अगर हम यह मानना शुरू कर दें कि जो भूदान में भाग नहीं लेता, वह पाखंडी और नास्तिक है, तो सचमुच भूदान एक अधम संप्रदाय और निकृष्ट मत-वाद बन जायगा। परंतु हमारी यह बुद्धियुक्त धारणा है और होनी चाहिए कि भूदान और ग्रामदान सर्वोदय के वाहन हैं। मानवता की वह सवारी है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार 'दांडी-मार्च' भारतीय लोकात्मा का वाहन था। इस देश का सबसे अहम् सवाल अन्न और ज़मीन का है। इस देश का प्रधान संकट अन्न-संकट है और मुख्य समस्या कृषि को अधिक समृद्ध बनाने की है। जो प्रमुख साधन होता है, उसीके उल्लेख में दूसरे सारे आनुषंगिक साधनों का समावेश हो जाता है। अक्सर बड़े भाई के नाम के जिक्र में दूसरे सारे भाइयों का जिक्र शामिल समझा जाता है। प्रमुख साधन दूसरे साधनों का रुख और स्वरूप निर्धारित करता है। इसीलिए भूदान-आरोहण की प्रक्रिया का वर्णन भूदानमूलक शब्द से किया है। यह सांप्रदायिकता नहीं है, साधन-निष्ठा का व्यावहारिक स्वरूप है।

ऊपर के विवेचन से यह तो स्पष्ट हो जायगा कि सिद्धांत और व्यवहार, दोनों पहलुओं से, भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान क्रांति की रीति ही श्रेयस्कर है। इधर एक जिम्मेवार और सुविज्ञ व्यक्ति ने यह भी कहा कि गांधीजी की अर्थनीति के लिए आज की परिस्थिति सब तरह से प्रतिकूल है। आज तो बड़े पैमाने का और केंद्रीकरण का दौरदौरा है। छोटे-छोटे उद्योगों के लिए और स्वयंपूर्ण आर्थिक क्षेत्रों के लिए आज कोई मौका नहीं है।

क्या दरअसल ऐसा है? सोचने की जरूरत है। जब 'फ्लू', हैजा और छूत की दूसरी बीमारियाँ पैदा होती हैं, तो केंद्रीय सरकार, राज्य-सरकार और स्थानीय सरकारें एक ही मंत्र उच्च स्वर से पढ़ती हैं, "भीड़ से बचो", "सट कर मत रहो," "अलग-अलग बिखर कर रहो।" क्या इसका यह मतलब है कि पहले मधु-मक्खियों के छत्ते की तरह बस्तियाँ बनाओ और संकट आने पर फैल जाओ? ऐटम बम गिराने के लिए सबसे अच्छा निशाना वह स्थान माना जाता है, जहाँ बहुत से लोग इकट्ठे हों, उनके प्रतिदिन के जीवन की सामग्री केंद्रित हो, जिससे कि एक ही धड़ाके में दुश्मन का गुलशन वीरान हो जायें और उसका शरीर ठीकरे-ठीकरे हो जायँ। दो राष्ट्रों के बीच अदावत पैदा हो जाने की हालत में संयोजन की सामग्री इधर से उधर और उधर से इधर न जा सके, तो भी सारा संयोजन व्यर्थ हो जायगा।

बड़े-बड़े समर्थ विचारकों और अनुभव-वृद्धों का यह भी कहना है कि आर्थिक केंद्रीकरण सर्वतोगामी 'राज्यवाद' का अग्रदूत होता है। 'लोकशाही' से मतलब है सत्ता नागरिकों में बँट जाती है, वह कहीं इकट्ठी नहीं होती। 'केन्द्रीकरणवाद' और 'राज्यवाद' का मतलब है कि सम्पत्ति और सत्ता अजस्र रूप में एक जगह इकट्ठी हो। उस व्यवस्था का कलेवर विराट् लोकसत्तावाद का होता है, स्वरूप व्यवस्थापक-वाद का होता है और प्रकृति कल्याणकारी राज्यवाद की होती है। कल्याणकारी राज्यवाद की शकल समाजवादी भी हो सकती है, पूँजीवादी भी हो सकती है और अधिनायक शासन की भी हो सकती है।

अतएव जब यह कहा जाता है कि आज का वातावरण और परिस्थिति गांधी-प्रतिपादित अर्थनीति और लोकनीति के लिए अनुकूल नहीं है, तो दूसरे शब्दों में यही कहा जाता है कि लोकतंत्र का पौधा और मानवीय विभूति का दिव्य तरु आज की आबहवा में न तो जड़ पकड़ सकता और न पनप सकता है। परिस्थिति और वाता-वरण में हमें बिलकुल दूसरी ही संभावनाओं और प्रसाद-चिह्नों का दर्शन हुआ है।

क्रांति के लिए सबसे बड़ा खतरा अराजकता का होता है। यह मायाविनी मोहक रूप लेकर क्रांतिवादी को रिझाती और फुसलाती है। नतीजा यह होता है कि जो लोग क्रांति की मर्यादाओं को नहीं समझते वे उद्दंड और निरंकुश हो जाते हैं। सर्वोदय-संमेलनों के लिए जाने वाले व्यक्ति भी रेलगाड़ियों को मनमाने काम के लिए, मनमाने वक्त तक रोकने में शान समझते हैं! यह तंत्र-मुक्ति का अमृत नहीं है, तंत्रहीनता की मदिरा है। मदिरा भी रत्न तो है, लेकिन वह मनुष्य के होश-हवास गायब कर देती है। अपरिमित संयम की शक्ति ही तंत्रमुक्ति की सनद है। हम चाहते हैं कि लोकचारित्र्य का विकास हो। नागरिक कानून के डर से और कानून के भरोसे नहीं जीयेगा। कानून के लिए उसके मन में आदर होगा। वह शांतिपरायण होगा, कानूनबाज नहीं। व्यवस्था और अनुशासन, दोनों की प्रतिष्ठा समाज में बढ़ायेगा। अस्तव्यस्त जीवन को मानव के लिए लांछन मानेगा। यह वृत्ति हमारे आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप में कैसे प्रगट हो, यह सवाल होता है। इसकी एक पहचान विनोबा ने बतलायी है। एक व्यक्ति के हाथ में हँसिया है। उसे देख कर किसीके मन में आशंका नहीं होगी, क्योंकि वह जानता है कि हँसिया फसल काटने के लिए है और जब तक इस मनुष्य के होश ठिकाने हैं, तब तक यह हँसिये से किसीका गला नहीं काटेगा। दूसरे मनुष्य के हाथ में कढ़ाई है, तब तो किसीको उसकी तरफ से जरा भी आशंका नहीं होगी। हमारे साधन की शुद्धता की एक पहचान यह भी है कि उसको देख कर किसीके मन में डर या द्वेष पैदा न हो। यह अचूक पहचान नहीं है, फिर भी उपयोगी पहचान है। भूदान और ग्रामदान के कार्यकर्ता की यह कोशिश होनी चाहिए कि उसके शब्दों और कामों से आतंक या विद्वेष पैदा न हो। लेकिन इससे भी एक अधिक प्रत्यक्ष कसौटी है। वह यह कि लोगों में क्षोभ और प्रतिरोध की तीव्रता पैदा करने की शक्ति की अपेक्षा प्रक्षुब्ध भीड को संभालने की क्षमता कार्यकर्ता में अधिक होनी चाहिए। तंत्रमुक्ति की मर्यादाएँ निबाहने का और अराजकता के अनर्थ से बचने का यही एकमात्र उपाय है। अहिंसात्मक लोकांदोलन की यह लक्ष्मण-रेखा है। ईमान की लकीर है।

ग्रामराज्य में संकीर्ण क्षेत्रसत्तावाद का प्रबल परिपंथी खड़ा है। पुराने ग्रीस और रोम के नगर-राज्य एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन थे। पडौसी के समान कोई

www.vinoba.in

दोस्त भी नहीं होता और कोई दुश्मन भी नहीं होता। गाँव के राज्य से अगर यह मतलब हो कि हम अपने गाँव के राजा, तुम अपने गाँव के राजा और हमारी और तुम्हारी या तो होड़ होगी या मुठभेड़ होगी, इस तरह का संकीर्ण सत्तावाद अगर ग्रामराज्य की गैल में आय, तो हम भारतीयत्व की पवित्र विरासत से वंचित हो जायेंगे और मानवता की तरफ से तो मुँह ही मोड लेंगे।

याद रहे कि ग्राम-दान और भूमिदान का आधार राज्यवाद या प्रतिराज्यवाद अथवा सत्तावाद या प्रतिसत्तावाद नहीं है। वह तो लोकाश्रित व्यवस्था का उद्देश्य अपने सामने रखता है। तंत्रमुक्ति अराज्यवाद नहीं है, बल्कि व्यवस्था-परायणता है। इस तरह व्यक्तिगत उद्दंडता, सामुदायिक अराजकता और संकुचित ग्रामवाद के खतरे से बचने के दो ही रास्ते हैं। एक, कार्यकर्ता में भड़काने की सिफत की बनिस्बत संभालने की कूवत विशेष हो और दूसरा, स्वयंपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र एक-दूसरे के सहयोग तथा एक-दूसरे की सुविधाओं के लिए संयोजन करे।

आज का बोगस जनतंत्र !

(विनोबा)

केरल प्रदेश में हमने शांति-सेना का एक नया विचार रखा।

पहले भू-दान चला, आगे छठे हिस्से की माँग की गयी। फिर भूमि की मालकियत ही मिटा कर सारा गाँव ग्रामदानी बनाने की माँग हुई और परिणाम-स्वरूप २५०० ग्रामदान भी हो गये। फिर तमिलनाड़ में ग्रामराज्य की कल्पना रखी। अब केरल प्रदेश में एक कदम हम और आगे जा रहे हैं। वैसे देखा जाय, तो न हम आगे जाते हैं, न पीछे; सर्वोदय-विचार के अंदर ही ये सारी चीजें आ जाती हैं, परन्तु एक-एक चीज़ जैसी बनती जाती है, उसे देख कर आगे एक-एक कदम उठाते हैं। हम ध्येयवादी तो हैं, परन्तु व्यावहारिक ध्येयवादी हैं। इस वास्ते एक-एक कदम बढ़ा कर अब सेवा-सेना, शांति-सेना का तरीका यहाँ बताना चाहते हैं। जो सेवा-सेना का सैनिक होगा, वही मौके पर शांति-सेना का सैनिक भी होगा। वह सैनिक ऐसा होगा, जो निरंतर जनता की सेवा करता है, मौके पर जनता में शांति लाने के लिए बलिदान देता है और उसका नैतिक असर जनता पर भी होता है। इस तरह सेवा-सेना और शांति-सेना की दुहरी कल्पना यहाँ विकसित हो रही है। लेकिन केवल विचार या चिंतन के तौर पर नहीं, प्रत्यक्ष व्यावहारिक प्रयोग के तौर पर उसका आरंभ करना है।

केरल की अनुकूल भूमि

उसके लिए केरल की भूमि भी अनुकूल है। यहाँ अनेक धर्म हैं, अनेक पार्टियाँ हैं, पार्टियों के बीच कशमकश है। पुराने जमाने से दुनिया के साथ यहाँ का संबंध भी बराबर रहा है और दुनिया के विचार यहाँ फौरन पहुँच जाते हैं। इसी तरह यहाँ का अपना विचार भी दुनिया में फैलेगा। इसलिए केरल प्रदेश में सेवा-सेना, शांति-सेना की स्थापना होती है, तो उसका परिणाम दुनिया पर होगा। विश्व-शांति की बात छोटे मुँह बड़ी बात नहीं है। अगर एक छोटे प्रदेश में बुनियादी कार्य करते हैं, तो दुनिया के लिए वह कुंजी बन जाती है। विद्यार्थी छोटे त्रिकोण में जो सिद्ध करता है, वही बड़े त्रिकोण में सिद्ध होता है। इसी प्रकार छोटे प्रदेश में बुनियादी चीज पर अगर कार्य होता है, तो वह दुनिया को लागू होगा। याने बुनियादी काम स्थानिक शक्ति से ही विकसित होने वाला काम और बुनियादी तरीका याने जिसमें हरएक मनुष्य की अंतःशक्ति से काम होता है। जनता की अंतर्गत शक्ति से हमें काम करना है। यह एक व्रत होता है।

आज सब देशों में सरकारी सत्ता है। वह चुनी हुई सरकार है, पर जन-शक्ति से काम नहीं होता है। वह प्रातिनिधिक लोकशाही है, याने सारा सेवा-कार्य हमने प्रतिनिधियों को सौंप दिया है। पर महत्त्व का काम तो हम स्वयं करते हैं! भोजन, नींद आदि हमने प्रतिनिधियों पर नहीं सौंपी है। जीवन की महत्त्वपूर्ण बातें हम स्वयं करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो बात प्रतिनिधियों पर सापी है, वह महत्त्व की नहीं है। शादी के लिए वर न हो, तो वह काम प्रतिनिधि से नहीं चलेगा! इसलिए किसी भी महत्त्व के काम में प्रतिनिधि नहीं चलता। हाँ, गौण कार्य में चलता है। अपने सारे महत्त्व के काम हम प्रतिनिधियों को सौंप दें, तो हम शक्तिहीन बन जाते हैं। फिर तो हमको अकल रखने की भी जरूरत नहीं। नौकरी के लिए १२८ नौकर (एम०एल०ए०) चुने हैं, परन्तु वे ही असली मालिक बनते हैं और जनता नाममात्र की मालिक रह जाती है—बिलकुल गुलाम की हैसियत में। क्या यह लोकशाही है? आज अमेरिका की कुल सत्ता आईक और उसके चंद साथियों के हाथ में है। वे चाहें, तो देश को या दुनिया को भी आग लगा सकते हैं, अगर उनकी अकल गलत दिशा में गयी। इतनी भयानक शक्ति प्रतिनिधियों के हाथ में हमने दे रखी है। हमारे कुल जीवन पर हमारा काबू नहीं रहा है। शादी का कानून, तालीम का कानून, जमीन का कानून, व्यापार का कानून! कौनसा कानून सरकार नहीं बना सकती? जीवन की हरएक शाखा में सरकार कानून बना सकती है। यह अत्यन्त भयानक दशा है। केवल इस देश की ही नहीं, कुल दुनिया की! इसीलिए प्रतिनिधियों से जो कार्य चलता है, उसे हमको गौण बना देना है और अपने जीवन के जो महत्त्व के काम हैं, वे अपनी निज की शक्ति से जनता को करने हैं। ग्रामदान से यह हो सकता है। इस वास्ते सेवा-सेना खड़ी करनी है। लोग स्वयं ऐसी सेवा-सेना खड़ी करें। यहाँ एक सर्वोदय-मंडल बना है। मंडल के सेवक सबके सेवक और पक्ष-मुक्त हैं। सबको वे दुरुस्त करने वाले हैं। वे अपनी विवेक-बुद्धि किसी सत्ता को नहीं दे सकते।

आज क्या स्थिति है? मान लो कि १०० वोटर्स हैं। उनमें से ६० लोगों ने वोट दिया और ४० ने नहीं। उसमें से फिर ३० वोट जिसे मिले, वह पार्टी राज चलाती है और बाकी ३० वोट भिन्न पक्षों में बँट गये हैं। इसका मतलब यह हुआ कि ३० लोगों की सत्ता १०० पर चलेगी!!

अब एक बिल असेंब्ली में लाना है, तो उन चुने हुए ३० लोगों की पार्टी-मीटिंग होती है। उसमें उस बिल का मानो १५ सदस्य विरोध करते हैं। वे मीटिंग में अपना विरोध तो बतायेंगे, परन्तु असेंब्ली में वे अनुकूल ही मत देंगे। शेष जो १५ सदस्य हैं, उनमें भी उनका जो नेता होता है या एक-दो जो मिनिस्टर होते हैं, उनकी बात मानने वाले वे सदस्य होते हैं! इस तरह दो-तीन मनुष्यों का राज १०० मतदाताओं पर चलता है!

बोगस मामला!

इस प्रकार से देखा जाय, तो सारा मामला बोगस लगता है। इसमें जन-शक्ति प्रकट नहीं होती, बल्कि पुराने राजा जितना नुकसान कर सकते थे, उससे ज्यादा नुकसान ये कर सकते हैं, क्योंकि ये "लोकमत अनुकूल है", ऐसा दावा कर सकते हैं। अलावा इसके, पुरानी राजसत्ता "वेलफेअर" नहीं थी, इस वास्ते जीवन के कुछ विभागों पर उनकी सत्ता भी नहीं थी। राजा अच्छा हो, तो राज अच्छा चलता था, नहीं तो वह खराब चलता था। आज भी यही हालत है। इसी वास्ते बंबई में शराब-बंदी हो सकती है, परन्तु गोवध-बंदी नहीं हो सकती और बिहार में गोवध-बंदी हो सकती है, परन्तु शराब-बंदी नहीं हो सकती। यह सब क्या 'लोकमत' से चल रहा है? जैसे राजा अपने सरदारों से काम चलाते थे, वैसे ही, आज जो कैबिनेट बनती है, उसमें प्राइम मिनिस्टर अपने साथी चुन लेता है! कहते हैं, ऐसा नहीं करेंगे, तो 'टीम' नहीं बनेगी। राजसत्ता के प्रतिक्रियास्वरूप आज की यह डेमोक्रेसी बनी है। इस वास्ते पहले के कुछ दोष इसमें आ ही जाते हैं। इस प्रकार सब सत्ता सरकार के हाथ में है। यह क्या स्वराज्य है, जहाँ जनता अपनी ताकत ही महसूस नहीं करती? पुरानी राजसत्ता और आज की सरकार में फरक भी क्या है? इतना ही हुआ कि जो पत्थर मेरे सिर पर दूसरों द्वारा लादा जाता था, वह मैं स्वयं अपने हाथों से अपने सिर पर लाद ले रहा हूँ! पहले मुझे वह अधिकार प्राप्त नहीं था, अब पत्थर स्वयं लाद लेने का अधिकार प्राप्त हुआ है! पर वह है तो बोझ ही न?

सच्ची आजादी कैसी?

इसलिए आज दुनिया में आजादी नहीं है। जो है, वह केवल भ्रम है। आजादी तब तक नहीं होगी, जब तक हरएक मनुष्य, हरएक गाँव अपनी शक्ति महसूस नहीं करता। हमारे गाँव का इंतजाम हम करते हैं, गाँव के झगड़े हम मिटाते हैं, तालीम की पद्धति हम तय करते हैं, गाँव की रक्षा हम करते हैं, गाँव का व्यापार हम करते हैं, इस तरह गाँव के लोग अपना कारोबार स्वयं देखेंगे, तब गाँव की ताकत बढ़ेगी और फिर राज्य चलाने का अनुभव गाँव-गाँव के लोगों को होगा। फिर पंडित नेहरू के बाद क्या होगा, यह सवाल खड़ा नहीं होगा। परन्तु आज गाँव में अकल नहीं है, क्योंकि वहाँ स्वराज्य ही नहीं है! सब पराधीन बने हैं।

एक मिसाल देता हूँ। २५ साल पहले बिहार में बहुत बड़ा भूकंप हुआ था। लोगों के नेता प्रथम दौड़े गये वहाँ के लोगों की मदद में। बाद में सरकारी

www.vinoba.in

मदद आयी। वैसा ही गुजरात में जब बड़ी बाढ़ आयी थी, तब हुआ। यह स्वराज्य के पहले की बात है। अब स्वराज्य के बाद की घटना देखिये! हम ४ साल पहले बिहार में घूमते थे। उस वक्त बड़ी बाढ़ आयी थी। हम सीतामढ़ी में थे। वहाँ से ४ मील दूरी पर बाढ़ थी। १००–१५० मील का क्षेत्र पानी से व्याप्त था। परन्तु सीतामढ़ी के लोगों को उसकी कुछ भी चिन्ता नहीं !! उनके सिनेमा वगैरह अच्छी तरह से चल रहे थे! उनका मानना था कि "सरकार करेगी। हमको क्या करना है?" स्वराज्य की सरकार है, तो उसका यह कर्तव्य ही है, पर क्या लोगों का कुछ भी कर्तव्य नहीं है? सभी काम क्या सरकार ही करेगी? फिर हुआ भी यह कि सरकार की जो भी मदद आयी, वह गरीबों के पास गयी ही नहीं! बीच में ही बड़े-बड़े लोगों ने उसका लाभ उठा लिया!

इससे भी बड़ी एक बात और है। सरकार उस क्षेत्र की मदद करना चाहती थी। पर उसके अधिकारी कम पड़ते थे। उसने जनता से सहायता माँगी। पर उस वक्त सोचा गया कि वहाँ पी० एस्० पी० का वजन है, तो यह मदद अगर उनके जरिये बाँटी जाय, तो उस पार्टी का बल बढ़ेगा! इसलिए तय हुआ कि उस पार्टी के जरिये मदद नहीं बँटनी चाहिए, एक ही पार्टी के जरिये मदद बँटनी चाहिए। धिक्कार है, ऐसी लोकशाही को! इस वास्ते हम कहते हैं, अभी स्वराज्य की स्थापना करना बाकी है। अपने देश में ही नहीं, तो दुनिया में ही आज स्वराज्य नहीं है।

ऐसे स्वराज्य का एक नमूना हम केरल में करना चाहते हैं। ऐसी आशा से यहाँ सर्वोदय-मंडल बनाया है। उसमें सब लोग मदद दें। पर यह पार्टी का खयाल छोड़ दें। 'पार्टी' याने 'अखंड' को 'खंड' करना! इससे देश की ताकत फूटती है, टूटती है! अतः पार्टी से मुक्त उतनी ही जरूरी है, जितनी कि जाति से! तो सब लोग पार्टियों से मुक्त होकर सर्वोदय-मंडल में ताकत लगायें। हमें संपत्तिदान, श्रम-दान, ग्रामदान और ग्रामराज्य करना है। शांति-सेना का कार्य भी शुरू करना चाहिए। लेकिन ध्यान रहे कि यह कार्य प्रतिनिधियों से नहीं होगा, आपको स्वयं करना होगा। मुख्य काम आप ही करेंगे। आपकी मदद में एक सेवक भी होगा। इस तरह ५ हज़ार लोगों के लिए एक सेवक होगा और उसके पोषण आदि का भार उन ५ हज़ार लोगों को करना है। फिर गाँव में अशांति ही नहीं रहेगी। फिर भी अगर एकाध कोई ऐसा शख्स है, जो समाज में अशांति निर्माण करता है, तो उस समय हमारी सेवा-सेना ही शांति-सेना बन जायेगी।

(काकोड़ी, कोलीकोड़, २२-७)

प्रेम की बिजली प्रकट करना है!

(विनोबा)

घर-घर में प्रेम मौजूद है। समाज में भी एक-दूसरे पर सब प्रेम करना चाहते हैं। फिर भी प्रेम का सामूहिक बल नहीं पैदा हो रहा है। घर में हम प्रेम का कानून चलाते हैं, तो पड़ोसी के साथ स्पर्धा का कानून।

साइन्स के प्रयोग पहले छोटे पैमाने पर होते हैं। वैसे ही घर-घर प्रेम के प्रयोग चले। उससे आनंद और सुख भी निर्माण हुआ। अब उस प्रेम का सामाजिक अप्लीकेशन (प्रयोग) क्यों हो? अगर प्रेम से घर में दुःख है, तो उसे हम समाज में न लायँ, और अगर घर में सुख है, तो समाज में उसे लाना चाहिए। घर में अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार कमाई होती है। लेकिन उसके अनुसार तो खाना नहीं होता। फिर समाज में ही ऐसा क्यों कि जो ज्यादा कमाये, वही ज्यादा भोगे और जो न कमाये, वह भूखों मरे? कम-से-कम बच्चों में तो यह भेद न हो! धनी और गरीब, दोनों के लड़के कमाई नहीं करते हैं, लेकिन फिर भी धनी के बच्चों को अच्छा खाना, रहना, पढ़ाई आदि सब मिलती है, तो गरीब को यह कुछ भी प्राप्त नहीं है। और यह सब उन लोगों के द्वारा चलता है, जो घर में तो प्रेम ही अनुभव करते हैं।

इस तरह प्रेम घर में कैद हुआ। समाज-व्यवस्था में यह एक गलती रह गयी और प्रेम की शक्ति घर में भी समाप्त हो गयी! जहाँ पानी बहता नहीं, वहाँ वह धीरे-धीरे सड़ने लगता है। आज वही हालत प्रेम की है। वह घर में रुका। फिर सड़ने लगा। फिर बदबू आने लगी और उसका रूपांतर काम-वासना में हो गया। अपनेवालों से प्रेम, इसलिए दूसरों के साथ मत्सर करना पड़ता है और अपनेवालों से प्रेम याने कामवासना साधने की ही योजना! इसलिए शंकराचार्य ने कहा, 'जनकृपा नैष्ठुर्यमृत्सृज्यताम्'–"नैष्ठुर्य नहीं होना चाहिए। स्नेह, कृपा भी नहीं होनी चाहिए।" तो शंकराचार्य जैसे महान् यति का दंड ऐसे पवित्र स्नेह को क्यों खाना पड़ा? इसलिए कि घर में प्रेम कामवासना और बाहर मत्सर बन गया, अन्यथा वह मार खाने के लिए नहीं है, क्योंकि आगे वे ही कहते हैं—'भूतदयां विस्तारय'–"प्रेम और करुणा का विस्तार करो।" यही तो विस्तार नहीं होता है, इसलिए वह दुर्गुण बन जाता है।

सर्वोदय प्रेम-विस्तार का ही कार्यक्रम है। वह कहता है कि घरवालों पर जैसे प्रेम करते हो, वैसे बाहरवालों पर भी करो, तभी प्रेम की शक्ति प्रकट होगी। कुछ चीजें बंद करने से ताक़त प्रकट होती है और कुछ को खोलने से। भाप के समान क्रोध को खोल देते हैं, तो शक्ति क्षीण होती है और उसे दबा कर रखते हैं, तो तेजस्विता और पराक्रम प्रकट होता है। भीम को बहुत गुस्सा आता था। धर्मराज कहते, "आवेश को रोक रखो। मौके पर वह पराक्रम करेगा। नहीं तो यों ही चला जायगा।" भीम पूछता, "कब तक इन हाथों को रोकूँ?" फिर भी धर्मराज कहते, "सब्र करो।" भीम ने सब्र किया और फिर मौके पर पराक्रम भी। तो उसने कुछ खोया नहीं। इसी तरह कुछ ताकतें खुलने से प्रकट होती हैं, जैसे बिजली। वह बंद पड़ी है। लेकिन स्विच दबाते ही वह प्रकट होकर अंधकार दूर कर देती है। सर्वोदय में इसी तरह प्रेम को प्रकाशित करना है।

अभी गुरुवायूर के मंदिर के द्वार पर हमने पढ़ा: "इस मंदिर में गैर-हिंदू नहीं जा सकते।" हमारे साथ खिश्चन भाई भी थे। लेकिन उनके जैसे श्रद्धावान् के लिए भी वहाँ रोक थी। भगवान् के दरबार में भी इस तरह से भक्तों पर रोक लगे और फिर भी हम आस्तिकता की बात करें, तो वह एक आश्चर्य ही है। आस्तिकों-आस्तिकों के बीच ही झगड़ा! एक भाई ने पूछा, "क्या आप मस्जिद में बैठ कर गीता पढ़ेंगे?" मैंने कहा, "सात रोज अजमेर की दरगाह में हमने प्रार्थना की और गीता के 'स्थितप्रज्ञ' के श्लोक गाये। मुसलमानों ने भी बहुत ही प्यार दिखाया।" इसलिए हर धर्म की भक्ति-भावना का आदर हमें करना चाहिए। संकुचित बनते हैं, तो नास्तिकता फैलती है और प्रेम शक्तिहीन रह जाता है।

हर चर्च में इतवार को जो प्रेम के गीत गाते हैं, वे ही फिर ऐटम बम भी बनाते हैं, क्योंकि उन्होंने भी प्रेम को संकुचित बना लिया। हमारे शरीर में भी एक छोटा-सा चेतन ऐटम है। अगर 'जड़ ऐटम' में इतनी शक्ति है, तो चेतन ऐटम में कितनी होगी? लेकिन हम उसको "लिबरेट" नहीं करते, खोलते नहीं। सर्वोदय यही खोलना चाहता है। अब समय आया है कि हिंदू, क्रिस्ती, मुसलमान आदि सब धर्मों का समन्वय हो और जहाँ कचरा दिखे, वह फेंक दिया जाय। हम सार-असार-विवेक करें, जैसे शंकराचार्य ने किया। ऐसा अगर हम करेंगे, तो दुनिया की नास्तिकता मिटेगी। कचरे की बात से धर्मवालों को दुःख लग सकता है, लेकिन सत्य पहचानना होता है। हर धर्म में कुछ गुण-अवगुण आ जाते हैं, इसलिए विवेक-बुद्धि रखनी चाहिए और प्रेम-शक्ति की चर्चा में जो भेद-भाव आते हैं, उन्हें हमें दूर करना चाहिए।

हमको अपना हृदय बड़ा बनाना होगा। बुद्धि और हृदय के बीच अंतर नहीं हो सकता। विज्ञान से बुद्धि बढ़ी, लेकिन साथ में हृदय नहीं बढ़ा, तो द्वेष बढ़ेगा ही। हृदय छोटा है, इसलिए बुद्धि को तो छोटी नहीं रख सकते। फिर तो वह जानवरों का जीवन हो जायगा। इसलिए आपको बुद्धि भी बड़ी बनानी होगी और हृदय भी।

(कोलीकोड़, १४-७)

'अनुरोधी' और 'प्रतिरोधी' प्रेम

(विनोबा)

प्रेम की ताकत नहीं बन पाती, इसका और एक कारण यह है कि हमारा प्रेम 'अनुरोधी' होता है, याने जो हम पर प्रेम करता है, उसी पर हम प्रेम करते हैं। इसलिए ताकत पैदा नहीं होती। पर ऐसा तो जानवर भी करते हैं। गाय के पास प्रेम से हरी घास लेकर जाते हैं, तो वह भी प्रेम से पास आती है। गाय में प्रेम की ताकत नहीं है, क्योंकि आपका प्रेम देख कर अनुरोधी प्रेम उसमें पैदा होता है। लेकिन जहाँ 'प्रतिरोधी' प्रेम पैदा होता है, वहाँ ताकत बनती है। कोई हमारा द्वेष करे, फिर भी हम उस पर प्रेम करें, तब प्रेम की ताकत बढ़ती है। बच्चे को माँ लाड़-प्यार से सेवा करती है, इसलिए बच्चे में प्रेम पैदा होता है, लेकिन प्रेम की शक्ति तो नहीं बढ़ती! द्वेष से द्वेष, प्रेम से प्रेम, भय से भय, ये सब प्रक्रियाएँ जाति की प्रक्रियाएँ हैं, जैसे बकरी से बकरी, भेड़ से भेड़ पैदा होता है। यह अनुरोधी प्रेम है, 'बीज-फल-न्याय' है। प्रेम का

www.vinoba.in

स्वाभाविक धर्म ही है कि प्रेम से प्रेम प्रकट हो। पर आइने में चित्र का प्रतिबिंब उठता है, तो वह चित्र का स्वतंत्र निर्माण नहीं माना जा सकता। प्रेम से प्रेम प्रतिबिंब-रूप ही है। लेकिन अगर हम दुश्मनों पर प्यार करते हैं, द्वेष के सामने प्रेम करते हैं, तब प्रेम की ताकत प्रकट होती है। ईसा ने कहा था—'दुश्मन पर भी प्यार करो,' लेकिन आज ऐसा नहीं हो रहा है। उलटे द्वेष के सामने प्रेम को अव्यवहार्य भी मानते हैं! तो हमें द्वेष के सामने प्रेम ही करना चाहिए और प्रतिरोधी प्रेम की ताकत खड़ी करनी चाहिए। ग्रामदान-आंदोलन के मूल में यही विचार है।

समाज में आज कोई धनी तो कोई गरीब, कोई भूमिवान तो कोई भूमिहीन हैं। हम दान के द्वारा ऐसा प्रेम प्रकट करने के लिए कहते हैं कि गरीब का और भूमिहीन का संदेह और भय ही मिट जाय। ऐसा आक्रमणकारी याने द्वेष को पचा जाने वाला प्रेम हमें करना है। जैसे, कोई एक कुरता माँगता है। हम कहेंगे, उतने से तुम्हारी ठंढ नहीं जायगी, साथ में यह कोट भी ले लो! विचार समझ-समझ कर हम ऐसा आक्रमणकारी प्रेम प्रकट करेंगे, तो ही दुनिया को प्रभावित करने वाली शक्ति प्रकट होगी।

आज हिंदुस्तान-पाकिस्तान परस्पर से डर कर सेना बढ़ाते हैं। पर इससे ताकत नहीं प्रकट होती। सामनेवाला भय रखता है, तो हम निर्भय बनें, वह सेना बढ़ाता है, तो हम घटायें, इससे ताकत प्रकट होगी। पाकिस्तान से हमले का डर मानना याने दुनिया की गति के संबंध में अज्ञान प्रकट करना है। छोटा-सा सिख, लेकिन दुनिया के विवेक और समवेदना के बल पर ही तो उसने रक्षण की हिम्मत की।

दुर्भाग्य से आज सामूहिक तौर पर, राष्ट्रीय तौर पर प्रेम प्रकट करने का कार्य नहीं हो रहा है। वह तब तक नहीं होगा, जब तक हम प्रेम-शक्ति से समाज के मसले हल नहीं करेंगे। हिंसा के द्वारा मसले हल करेंगे, ऐसा विश्वास भी अभी पैठा हुआ है। लेकिन वह होता तो नहीं। तब वे कहते हैं, "दोष हिंसा का नहीं, हमारा है। इसलिए और भी ज्यादा हिंसा की ताकत बढ़ायेंगे।" लेकिन अंत में उससे भी मसले हल नहीं हुए, तो अब धमकाया जाने लगा और 'अभी लड़ाई हुई,' 'अभी लड़ाई हुई,' ऐसी "ब्रिंक ऑफ वार पॉलिसी" चलाने लगे। यह सब व्यर्थ होने वाला है। मसले तो प्रेम से ही हल होंगे और शक्ति अनुरोधी नहीं, प्रतिरोधी प्रेम में है। अनुरोधी प्रेम निज की शक्ति होती है। द्वेष के सामने प्रतिरोधी प्रेम प्रकट होता है, तो वह प्रेम की शक्ति होती है। इसलिए जहाँ-जहाँ द्वेष प्रकट हो, वहाँ-वहाँ प्रेम प्रकट हो। यही सब धर्मों का भी सार है। जितना घना अंधकार, उतना उत्तम प्रकाश हो! यह सब कठिन नहीं है। शांतिसेना बिना भेद-भाव के इस तरह प्रतिरोधी प्रेम द्वारा निरंतर सेवा कर सकती है। बल्कि सूर्य-किरण के सामने कुल नक्षत्र जैसे खतम हो जाते हैं, वैसे सेवकों के सामने भेद क्षीण हो जाने चाहिए। क्या अस्पताल में कोई भेद चल सकता है? इसी तरह निष्काम, निष्पक्ष और निरपेक्ष दुःखितों की सेवा करने वाली सेना हमें खड़ी करनी होगी, जिसका धंधा ही यह होगा कि द्वेष के सामने प्रेम ही प्रकट करें। द्वेष को प्रेमालिंगन छोटी चीज नहीं है। आज यदि सब लोग ऐसा नहीं कर सकते, तो आवश्यकता पड़ने पर सब शांतिसेना की मदद तो वे कर ही सकते हैं। शांतिसेना का हथियार ऐसा ही प्रेम होगा।

हिंसा की शक्ति प्रकट हो नहीं सकती, क्योंकि हिंसा पक्षपात नहीं करती! हर पक्ष को वह मदद करती है। वह मूर्ख शक्ति है। विज्ञान के सहारे हर किसीके पास जा सकती है। इसलिए उससे मसले हल हो नहीं सकते। अब प्रेम से ही हल करने के दिन आये हैं। पिछले जमाने में ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि लोगों के मन उसके लिए तैयार नहीं हुए। लोग पूछते हैं, "सत्ता के जरिये मसला क्यों नहीं हल करते?" सत्ता के जरिये घी और मैचबॉक्स तैयार कराके आग लगायी जा सकती है! लेकिन यह आग लगाने की ताकत हमको नहीं चाहिए। हम तो सर्वमंगल-कारी नयी शक्ति ही प्रकट करना चाहते हैं। सत्ता, फिर वह राजा की हो, तानाशाह की हो, अल्पसंख्या की हो या बहुसंख्या की, वह कल्याण भी करती है और अकल्याण भी। सत्ताएँ एक-दूसरे के विरोध में टकरा जाती हैं। सत्ता से कुछ अच्छे कार्य भी जरूर होते हैं, लेकिन बुनियादी मसले तो हल नहीं हो सकते और प्रेम की ऐसी ताकत भी पैदा नहीं हो सकती, जो दुनिया का उद्धार करे। वह शक्ति ग्रामदान में-सर्वोदय में-आज प्रकट हो रही है।

(कुन्नमंगलम्, कोलीकोड़, १६-७)

आदर्श शिक्षण किसे कहते हैं?

(विनोबा)

मनुष्य को भगवान् ने तीन देनें दी हैं। एक है वाणी। वैसे दूसरे प्राणियों को, पक्षियों को भी वाणी है, परन्तु वह विकसित नहीं हुई है। पक्षी भी एक प्रकार की आवाज निकालते हैं, परन्तु मनुष्य की तरह वे अपना विचार वाणी से प्रकट नहीं कर सकते। इस वास्ते वाणी मनुष्य के लिए बड़ी देन हैं। उसके सदुपयोग का शिक्षण स्कूल में मिलना चाहिए। हम अपनी मातृभाषा सीखते हैं, हिंदी-अंग्रेजी भी सीखते हैं, परन्तु यह वाणी की तालीम नहीं है। वाणी से मनुष्य बहुत सारी भाषाएँ बोल सकता है। लेकिन वाणी एक ही है, भाषा अनेक हैं। इसलिए भाषा का शिक्षण मिला, तो वाणी का मिला, यह नहीं मान सकते। वाणी का शिक्षण मिला, ऐसा तभी कह सकते हैं, जब वाणी पर काबू है, वाणी से सबके साथ संबंध जुड़ा है, वाणी से व्यर्थ शब्द नहीं निकलने चाहिए, वाणी से सत्य-वचन होना चाहिए। हरिनाम वाणी से लेना चाहिए। हमारी वाणी से दूसरों के हृदय को ठंढक पहुँचे, ऐसा होना चाहिए। वाणी से मित-मौन रखना चाहिए, व्यर्थ शब्द न बोला जाय। यह सब शिक्षण मिलेगा, तब कह सकते हैं कि वाणी का शिक्षण मिला।

भगवान् की दूसरी देन है कर्मेंद्रिय, याने काम करने की शक्ति। जैसे हमारे हाथ-पाँव, ये तो बंदरों को भी दिये हैं। वे हाथ का उपयोग फल तोड़ कर खाने में ही करते हैं। सेवा वे जानते ही नहीं। वे बीज बोना, पेड़ को पानी डालना आदि नहीं, केवल खाना जानते हैं। लेकिन मनुष्य अपने दोनों हाथों से सृष्टि की सेवा करता है। परन्तु आज यह कर्म करने की तालीम विद्याभ्यास में नहीं है। यह बहुत ही बड़ी कमी विद्याभ्यास में है। इसलिए विद्यार्थी कारगर बनाने के लिए बहुत कुछ करते हैं, परन्तु आखिर वे बेकार ही साबित होते हैं।

तीसरी बात है, सहानुभूतिवाला हृदय। किसीका दुःख देखते हैं, तो हृदय में करुणा होती है। प्राणियों में भी कुछ सहानुभूति होती है। घोड़े और कुत्तों में तो हम देखते हैं, परन्तु वे उनका पोषण करने वालों पर प्यार करते हैं। यह भी जानवरों का बड़ा गुण है। परन्तु एक प्राणी दूसरे प्राणियों के लिए दया, क्षमा नहीं दिखाता। शेर जब हिरण को खाता है, तो हिरण दुःखी होता है और शेर सुखी होता है। याने हिरण के दुःख में शेर का सुख है। वह उसकी तरफ सहानुभूति से नहीं देखता। परन्तु मनुष्य की यह बात नहीं है। मनुष्य को करुणामय हृदय मिला है। यह एक बड़ी देन है। उसके साथ सार-असार को पहचानने वाली बुद्धि भी दी है। याने मनुष्य को विवेकमय करुणायुक्त अंतःकरण दिया है। काम की तालीम में ऐसे हृदय-विकास की कोई योजना नहीं दिखती। तालीम में ऐसा कोई भी अवसर नहीं आता कि जिससे विद्यार्थियों में करुणा का विकास होता है। धर्माधर्म-निर्णय विवेक-बुद्धि से होता है, परन्तु वैसा विवेक बढ़ने की भी तालीम नहीं मिलती। लड़के बढ़ते हैं, उमर में बड़े होते हैं, तो स्वाभाविक ही उनमें विवेक आ ही जाता है। परन्तु उसके वृद्धि की सुव्यवस्थित योजना विद्याभ्यास में नहीं है। ये तीन देनें जिस तालीम में, जिस शिक्षा में हैं, वह है आदर्श तालीम।

(एलत्तुर, कोलीकोड़, २३-७)

स्त्री शारदा की प्रतिनिधि बने!

बहनों को तो गहरा अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि सारा सामाजिक कार्य उनके हाथ में है। इस हालत में आक्रमणकारी शक्ति स्त्रियों में आनी चाहिए, सरस्वती की तेजस्विता आनी चाहिए। यह अल्प अध्ययन से नहीं होगा। आत्मज्ञान होना चाहिए। आज जो स्कूल में सिखाते हैं, वह ऊपर-ऊपर का, बाहरी ज्ञान सिखाते हैं। यह ठीक है, वह भी ज्ञान होना चाहिए। परन्तु ताकत देने वाली दूसरी चीज है, उसका अध्ययन करना चाहिए। बहनों को देख कर मैंने बहुत बार कहा है कि अध्यात्मनिष्ठ बनो, तब पुरुषों को दुरुस्त करने की शक्ति स्त्रियों में आयेगी। पुरुष क्या चाहते हैं? "स्त्री हमारी मददगार बने, हमारे काम में मदद दें, परन्तु वह हमको दुरुस्त करने वाली नहीं चाहिए।" शंकराचार्य ने अपने शिष्यों के सामने शारदा की उपासना रखी। शारदा यानी सरस्वती। स्त्री शारदा की प्रतिनिधि होनी चाहिए। इसलिए बहनों को भी सर्वोदय-साहित्य का अध्ययन करना चाहिए, साथ-साथ दूसरा भी अध्ययन करना पड़ेगा, तब उनकी ताकत बढ़ेगी।

(पराप्पड़ी कोलीकोड़, १५-७) —विनोबा

---

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

१६ अगस्त सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

शांती-सेना की ताकत 'सम्मती-दान' से बढ़ेगी !

(वीनोबा)

शांती-सेना की ताकत तो आप सब लोगों की सम्मती है । बहुत सारे भाअीयों ने संपत्ती-दान दीया । अुससे अीतना ही हुआ की अुतने ही लोगों की हमको सम्मती मीली । परंतु सरकार के कारोबार के लीअे, सैन्य के लीअे सबकी, छोटे बच्चे की भी सम्मती है । वह कपड़ा पहनता है, तो जाता है टैक्स सरकार को ! अीस तरह हर मनुष्य अपनी सम्मती देता है । अुसके बीना सरकार की ताकत नहीं बनेगी । अुसी तरह शांती-सेना की ताकत तब तक नहीं बनेगी, जब तक आप सबकी सम्मती अुसको नहीं मीलती । अीसलीअे हम चाहते हैं की घर-घर से 'सम्मती-दान" मीलना चाहीअे, केवल संपत्ती-दान नहीं । शांती-सेना का कार्य तो संपत्ती-दान से चलेगा, परंतु अुसकी ताकत बनेगी सम्मती-दान से । अीसके लीअे हरेक बच्चा, बूढ़ा, भाअी, बहन, सबकी सम्मती चाहीअे । भगवान् ने कहा था, "मैं तो गोवर्धन पर्वत अुठा सकता हूं, अुठा भी लूंगा, परंतु अुससे आपकी ताकत नहीं बनेगी ।" अीस वास्ते गोकुल के सब बच्चे, बूढ़े, सबने मील कर गोवर्धन को अुठाया और फीर भगवान् ने अपनी अेक अुंगली लगायी । मतलब यह की सब हाथ नहीं लगाते, तब तक ताकत नहीं बनती । शांती-सेना की ताकत बढ़ने के लीअे हर घर में जीतने लोग हैं, अुनकी तरफ से सम्मती-दान के तौर पर कुछ देना होगा । संपत्ती-दान तो प्रत्यक्ष साक्षात् मदद है । अुसमें भी सम्मती है, परंतु हर लड़के से, हर बूढ़े से, बहन से वह नहीं आती । हमने सुझाया की पैसे के बदले श्रम दे दो । हर महीने में पांच मनुष्य के घर से सूत की अेक गुंडी मीलनी चाहीअे । अुसकी कीमत बीस नये पैसे होगी । याने पांच मनुष्य के परीवार में से हरेक मनुष्य को चार नये पैसे देना है । परंतु हम पैसे नहीं चाहते, श्रम चाहते हैं । अगर यह बात होगी, तो बहुत बड़ी क्रांती होगी । घर-घर में प्रॉडक्शन (अुत्पादन) होने लगेगा । बूढ़ा और बीमार भी अेक गुंडी दे सकता है । अीस तरह से हर घर से सम्मती मीलेगी । अीस अेक गुंडी से ही शांती-सेना को बहुत मदद तो नहीं मीलेगी । ज्यादा मदद मीलेगी संपत्ती-दान से, परंतु ताकत मीलेगी सम्मती-दान से । अीस वास्ते हर घर से सम्मती मीलनी चाहीअे ।

(तेरुवत्तुकटवु, कोलीकोड, २६-७-'५७)

* लिपि-संकेत : ि = ी; ी = ी, ख = ष, संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से ।

खून करने का ठेका !

(काका कालेलकर)

उत्तर ध्रुव के इर्दगिर्द के प्रदेश में एस्कीमो लोग रहते हैं । उनका जीवनक्रम बड़ा ही विषम होता है । वहाँ जो ठंडे पवन बहते हैं, उनसे बचने के लिए वे लोग बर्फ की ईंटों से बनाये हुए छोटे-छोटे घरों में रहते हैं । समुद्र की मछलियाँ मार कर कच्ची की कच्ची खा जाते हैं । रेनडियर नाम के पशुओं को जोत कर या कुत्तों को जोत कर बर्फ के ऊपर अपनी गाड़ियाँ चलाते हैं । इन गाड़ियों को पहियों की जरूरत नहीं होती । कुदरत के साथ अखंड लड़ते-लड़ते जीवन बिताना, यही है इनका पुरुषार्थ । इनके जीवन के और समाज-व्यवस्था के बारे में एक छोटी-सी सुन्दर किताब मैंने पढ़ी थी, जिसका नाम था 'काबलूना ।'

इन लोगों के अपने सामाजिक नियम हैं । एक किस्म की राज्य-व्यवस्था है । राज की ओर से न्यायाधीश अपराधियों को दंड करते हैं, सज़ा देते हैं । उत्तर अमेरिका की सरकार मानती है कि इनका प्रदेश अमेरिका के मातहत है, पर ये लोग स्वयं ऐसा नहीं मानते । खैर, इन एस्कीमो लोगों में से किसीने कुछ गुनाह किया होगा । इनके न्यायाधीशों ने उसका विचार किया और उसे देहान्त-दण्ड दिया ।

यह कोई अनहोनी बात नहीं थी । हरएक देश में अपराधियों को ऐसी सजा होती है । लेकिन अमेरिकन् सरकार ने कहा कि एस्कीमो लोग हमारी प्रजा हैं । उनके बीच अगर कोई गुनाह हुआ, तो उसका विचार करने का अधिकार हमारा है ! उनके न्यायाधीशों को विचार करने का अधिकार नहीं था, इसलिए उनकी ओर से दी हुई सजा—सजा नहीं, लेकिन गुनाह है !

अमेरिकन् अदालतों में एस्कीमो जजों पर खून का अभियोग लगाया गया और अमरीकन् कोर्टों ने इन एस्कीमो न्यायाधीशों को फाँसी की सजा दी ! ! !

तमाम सरकारों का कहना है कि कानून का नाम लेकर मनुष्य का खून करने का अधिकार या ठेका हमारा है । इस ठेके का जो कोई भंग करेगा, उसको हम सजा करेंगे ! ऐसे ठेके को 'मोनोपोली' कहते हैं । हमारे देश में डाकघर, तारघर चलाने का ठेका सरकार का है । रेलगाड़ियाँ चलाने का ठेका भी सरकार का है ।

जिस तरह हमारे देश में पैसे एक जगह से दूसरी जगह भेजने का धंधा मनीऑर्डर द्वारा सरकार भी करती है और चेक और हुंडी के द्वारा खानगी व्यक्तियाँ या कम्पनियाँ भी करती हैं, उसी तरह जापान में और अमेरिका में रेलगाड़ियाँ चलाने का काम वहाँ की सरकार भी करती है और खानगी कम्पनियाँ भी करती हैं । इसी तरह अगर अमेरिकन् सरकार गुनहगारों को क़तल करने का अपना भी ठेका चलाती और एस्कीमो लोगों का भी अपने न्यायाधीशों के द्वारा गुनहगारों को क़तल करने का अधिकार कबूल करती, तो क्या हर्ज़ था ? जनता की सहूलियत बढ़ती और शायद न्याय के संतोष का काम सस्ते में हो जाता !

लेकिन सरकारों को क़तल करने के अधिकार में खास दिलचस्पी होती है । ऐसा दिलचस्प अधिकार वह और किसीको स्वतन्त्र रूप से चलाने नहीं देती । घर की सास अपनी बहुओं के हाथों में कोई अधिकार रहने नहीं देती । वैसा ही यह मामला है ।

क्या वे एस्कीमो न्यायाधीश खूनी थे, गुनहगार थे, समाज के शत्रु थे, कि अमेरिकन् सरकार ने उन्हें फाँसी की सजा दी ? फाँसी की सजा ही रद्द होनी चाहिए । मनुष्य का वध करने का अधिकार किसी भी मनुष्य या सरकार को नहीं होना चाहिए ।

मनुष्य को खतम करने का अधिकार कुदरत के पास है ही । क्रोधवश कोई किसीको मार डाले, यह चाहे जितना बुरा हो (और उसको रोकना जरूरी है) तो भी उसे हम समझ सकते हैं । लेकिन एक आदमी ने किसीको मार डाला, इसलिए समाज का और कानून का नाम लेकर पाँच-दस लोग उस गुनहगार का खून करें, यह तो एक खून की जगह दो खून करने की बात हुई । खून-रूपी सजा कानून में होनी ही नहीं चाहिए ।

जिन अंग्रेजों ने और देशी लोगों ने भी पिछले सौ बरस में न्यायाधीश बन कर लोगों को फाँसी की सज़ा दी, उनके बारे में अगर स्वराज्य-सत्ता तय करे कि अंग्रेजों को इस देश पर राज्य करने का कोई अधिकार था नहीं, इसलिए उन्होंने जिन-जिन लोगों को फाँसी की सज़ा दी उन सब लोगों ने दरअसल तो खून ही किये हैं । उन सबको फाँसी ही देना चाहिए, तो कैसी हालत होगी ?

किसीको क़तल करना गुनाह ही है । सज़ा के दूसरे प्रकार भले चलें, क़तल करने का अधिकार—अधिकार ही नहीं है ।

('मंगल प्रभात' से)

www.vinoba.in

लोकमान्य की परंपरा !

(दादा धर्माधिकारी)

लोकमान्य तिलक के लिए जिनको बहुत इजत है, आदर है, पूज्य बुद्धि है, उनमें से भी कई लोगों ने उनकी विशेषता की ओर ध्यान नहीं दिया है। लोकमान्य तिलक भारत के पहले लोकनेता थे। क्या उनके पहले कोई लोकनेता ही नहीं था ? पहले लोककल्याण करने की इच्छा रखने वाले नेता हुए, लोगों की तरफ से आंदोलन करने वाले नेता हुए। वास्तविक लोकनेता उनके पहले हमारे देश में नहीं हुआ। इसका ज़रा स्पष्टीकरण कर दूँ। लोकमान्य के पहले दो तरह के नेता थे। एक तो वे, जो सोचते थे कि सशस्त्र क्रांति करके अंग्रेजों को निकाल देंगे। दूसरे वे, जो सोचते थे कि अंग्रेजों की विद्या, विज्ञान, भाषा तथा उनके तौर-तरीकों का अध्ययन करके उनके समान बन कर बराबरी के नाते उन्हें समझा देंगे, उन्हें युक्तिवाद में निरुत्तर कर देंगे, तो हम लोककल्याण कर सकेंगे। एक कहते थे—हथियारों से लड़ाई करेंगे। वे शस्त्रवादी थे। दूसरे थे–संसदवादी। लोकमान्य तिलक न तो शस्त्रवादी थे, न संसदवादी। इसीलिए वे वास्तविक लोकनेता हुए। शस्त्रवादी खुल कर काम नहीं कर सकते थे। कोई भी शस्त्रवादी इस देश में सशस्त्र विद्रोह की कोशिश में आतंक से आगे नहीं जा सका। बग़ावत करना, विद्रोह करना, क्रांति नहीं है। आतंकवाद तो क्रांति कतई नहीं है। जो शस्त्रवादी थे, वे अंग्रेजों की फौज का मुकाबला कर सकें, इतनी फौज खड़ी नहीं कर सकते थे। गुरिल्ला-वॉर में वे कभी सफल नहीं हो सकते थे। गुरिल्ला-युद्ध के तरीके का वर्णन माओ ने किया है—"When the enemy advances, we retreat, when he escapes, we harass, when he retreat, we pursue, when he is tired, we attack." "दुश्मन जब आगे बढ़ता है, तो हम हटते हैं। जब वह भागता है, हम सताते हैं। जब वह हटता है, हम पीछा करते हैं। जब वह थक जाता है, हम चढ़ाई करते हैं।" कुछ लोगों ने हमारे देश में इसे आज़माने की कोशिश की। लेकिन यह असंभव था। १८२३ के वहाबी विद्रोह से लेकर १९३० में भगतसिंह के बम फेंकने तक जितने प्रयत्न हुए, वे सब लोक-क्षोभ प्रकट करने के उग्र प्रयत्न थे। वे सफल हो नहीं सकते थे। वैसी परिस्थिति भी नहीं थी। सशस्त्र क्रांति में जनता का पुरुषार्थ शून्य होता था, क्योंकि जनता उसमें प्रत्यक्ष भाग नहीं ले सकती थी।

वासुदेव बलवंत फड़के ने कहा, "छोटे-छोटे ग्रामराज्यों के द्वारा सर्वत्र लोकराज्य स्थापित करना हमारा ध्येय है। हम लोकराज्य कायम करना चाहते हैं।" यह इतनी स्पष्ट भाषा में उस जमाने के किसी शस्त्रवादी ने नहीं कहा था। संसद में जो थे, उनके युक्तिसंगत शब्दों के पीछे ताकत नहीं थी। इन दोनों में जनता के पुरुषार्थ के लिए मौका नहीं था। लोकमान्य तिलक पहले नेता थे, जिन्होंने कहा : "बिना शस्त्र के और बगैर संसद के लोगों के पुरुषार्थ से स्वराज्य स्थापित करेंगे।"

तिलक ने मानो तुलसीदासजी की तरह भगवान् से कहा कि शार्ङ्गधर रामचंद्रजी के सामने मेरा सिर नहीं झुकेगा। सुदर्शनधारी कृष्ण के सामने सिर नहीं झुकेगा। तो तिलक का सिर भगवान् के चरणों में कब झुकेगा ? जब जनतात्मा के रूप में भगवान् का, लोकात्मा का साक्षात्कार करूँगा ! लोकनिष्ठ और लोकाश्रित आंदोलन की बुनियाद लोकमान्य तिलक ने डाली। भारतीय लोकात्मा की शक्ति का आविष्कार पहले लोकमान्य ने किया। आज की परिस्थिति में इस लोकात्मा के सत्त्व का आविष्कार कैसे करें, यही प्रश्न है।

अब जो क्रांति होगी, वह साधारण नागरिक की क्रांति होगी। उसका आयुध क्या होगा ? इसका जवाब तीनों पार्टियों ने दे दिया है। उन्होंने अपने झंडों पर उसका संकेत कर दिया है। काँग्रेस ने चरखा रख दिया अपने झंडे पर। पी.एस.पी. ने हल और पहिया रख दिया और कम्युनिस्टों ने--जो हिंसा के हिमायती माने जाते हैं–मशीनगन् नहीं, बंदूक नहीं, तो हथौड़ा और हँसिया रख दिया है अपने झंडे पर ! सबने उत्पादक परिश्रम के साधनों को क्रांति का प्रतीक क्यों बनाया ? क्योंकि शस्त्रों से अब क्रांति नहीं हो सकती। यह आधुनिकतम क्रांति-विज्ञान है।

बुद्ध ने, महावीर ने, ईसा ने शांति का उपदेश दिया, तब आकांक्षा नहीं थी। जब अशोक ने शस्त्र फेंक कर शांति की बात कही, तो भी सार्वत्रिक शांति की आकांक्षा नहीं पैदा हुई। जब लोकमान्य तिलक ने कहा कि बगैर लड़ाई के स्वराज्य मिलेगा, तब भी आकांक्षा नहीं थी, किन्तु आवश्यकता थी। गांधी ने उस आवश्यकता में से आकांक्षा पैदा करने की कोशिश की। परन्तु आज जब कि दुनिया के साधु-सन्त या दार्शनिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और राज्य-नेता भी, जिनमें सोवियत और चीन के राज्य-नेता भी शामिल हैं, शान्ति की आवश्यकता का अहर्निश प्रतिपादन करते हैं, तो यह मानना होगा कि अब शान्ति ही क्रान्ति का प्रत्यक्ष साधन होगा।

विचार जब जनता के हृदय को पकड़ लेता है, तो उसमें जो शक्ति आती है, उसके सामने कोई शस्त्र नहीं टिक सकता। सशस्त्र क्रान्ति में भी शस्त्र की प्रेरक शक्ति, विचार की शक्ति होती है। मार्क्स के हाथ में 'केपिटल' ग्रंथ था। धनुष, चक्र, गदा या खड्ग नहीं था।

छोटी-छोटी मालकियतों को मिला लेने को ग्रामदान कहते हैं। लोग समझते थे कि भूमिदान में खतरा है। हम तो जमीन दे दें और दूसरा न दे तो ? हम तो कोरे-के-कोरे ही रह जायेंगे। लेकिन अब तो ग्रामदान आया है, उसमें अगर कोई खतरा हुआ भी, तो वह खतरा सामुदायिक होगा। मुसीबत होगी, तो सबको होगी ! सामुदायिक मुसीबत से सामुदायिक हिफाजत पैदा होती है।

इस तरह लोकमान्य के इष्टदेव लोकात्मा का प्रत्यक्ष साक्षात्कार भूदान और ग्रामदान आंदोलन में होता है।

किसान का अन्न सस्ता हो ऐसा मजदूर, वकील, डॉक्टर, बाबू सब चाहते हैं। किसान की मेहनत का माकूल बदला उसे कैसे मिले ? इसका एक ही उपाय है। अन्न को और अन्न के उत्पादन के साधन को बाजार के इंद्रजाल से बचा लो। मनुष्यों की मेहनत, मालकियत और मुसीबत; इनको आपस में मिला लेने की कला सिखाओ। यही ग्रामीकरण है। लोकशाही की जड़ें मजबूत और पुख्ता बनानी हैं, तो लोकशक्ति जाग्रत तथा क्रियाशील होनी चाहिए। ग्रामदान इसके लिए अवसर उपस्थित करता है। लोकमान्य ने लोकशक्ति की अभिव्यक्ति के लिए अवसर उपस्थित किये, इसीमें उनकी लोकमान्यता का रहस्य है। ग्रामदान उस प्रक्रिया का अधिक प्रभावशाली साधन है। इसलिए लोकमान्य के प्रति अपनी पूज्य बुद्धि व्यक्त करने का वही सबसे उपयुक्त और आचारात्मक साधन है।*

* बैतूल में आम सभा में भाषण, ता. ३०-७-'५७

ग्रामदान के बाद

(धीरेन्द्र मजूमदार)

इस इलाके के अन्य ग्रामदानी गाँव मिल कर यह तय कर रहे हैं कि अब गाँव की सम्पत्ति भी इकट्ठी करें और ग्रामराज बनायें, क्योंकि केवल जमीन इकट्ठी हो जाने से ही समाज की मालकियत नहीं बन जाती है। सभी तरह की मालकियत मिटाने की प्रक्रिया का नाम वस्तुतः ग्रामदान है। गाँव की सारी जमीन, बुद्धि, वैभव तथा साधन सब एकसाथ कर दें और एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहायक हों, यह ग्रामदान का अर्थ है। राजघाट (मुँगेर) के नागरिक श्री रामेश्वरजी और प्रेमदासजी ने भी बताया कि सब लोग मिल कर समाज की एवं अपनी उन्नति करें। प्रेमदासजी ने यह भी बताया कि अगर ग्रामदान फेल हो गया, तो बदनामी खादीग्राम की ही होगी। लेकिन आपको मालूम है कि मेहनत करने से जिस प्रकार हाथ में घट्टा पड़ जाता है, उसी प्रकार खादीग्राम को बदनामी का घट्टा पड़ गया है ! आपके ऐसा कहने का मतलब यह हुआ कि ग्रामदान का मतलब आप लोग समझे ही नहीं हैं। ग्रामदान का मतलब यह है कि अब तक जो आप अपने घर को अकेला समझते थे, तो ग्रामदान हो जाने से सारा गाँव और उसमें रहने वाले सारे मनुष्य ही अब अपने हो गये हैं !

इस अवसर पर एक कहानी आपको सुनाऊँ ! एक घर में एक राक्षस घुसा और कहने लगा कि हम आप लोगों को खायेंगे ! प्रतिरक्षा में घर भर के लोग उसका मुकाबला करने लगे ! लेकिन सम्पूर्ण गाँव के लोग तमाशबीन मात्र बने हुए थे। अंततः उस राक्षस ने उस घर के एक लड़के को खा लिया। इसी तरह दूसरे घर में घुसा और वहाँ भी ऐसा ही किया। इतने पर भी गाँववाले देखते ही रहे। ईर्ष्या-वश एक आदमी ने कह दिया कि फलाँ घर में घुसो, तो वहाँ भी लड़का मिलेगा। इस तरह ईर्ष्या और फूट के कारण सारे गाँव के घरों के लड़कों को राक्षस ने खा लिया। तब कहीं सबने सोचा कि सबके घर के लड़के तो गायब हो गये हैं। अब सब लोग मिल कर उसका सामना करें ! इस तरह सबने मिल कर उस राक्षस को मारा, तब कहीं वह राक्षस मारा गया।

उसी तरह, जितने हमारे गाँव हैं, वहाँ एक राक्षस घुसा हुआ है और आप जानते हैं कि वह राक्षस कौन है ? वह राक्षस गरीबी है ! वह अलग-अलग घर में घुसती है और उसे अलग-अलग पस्त कर देती है। इस काम में अकसर उसे दूसरे घर के लोगों की सहायता भी प्राप्त होती है। दूसरे घरवाले दूर से तमाशा देखते हैं कि इस गरीबी में फँस कर वह किस हालत में पड़ा है। उसके बाद इस गाँव में मैं अच्छा हो जाऊँगा ! लेकिन वही नौबत उस पर भी आती है और वह भी गरीबी-रूपी राक्षस के

www.vinoba.in

चंगुल में फँस जाता है और गाँव के दूसरे लोग इस राक्षस को मदद भी कर देते हैं। इस तरह सारे गाँव की वही हालत हो जाती है। केवल समय और परिस्थिति की देर रहती है। अतः गरीबी-रूपी राक्षस से हर आदमी को मिल कर ही लड़ना होगा, तब कहीं वह राक्षस मारा जायगा! गाँव की हालत दिनोंदिन दयनीय होती जा रही है। उससे सारे-के-सारे गाँव थोड़े दिन में मिट जायेंगे। अतः ग्रामदान यही कहता है कि इस राक्षस से अलग-अलग न लड़ कर सब घरवाले मिल कर लड़ें। सब घरवाले मिल कर लड़ेंगे, तो गरीबी को मार भगायेंगे। अभी गाँवों में अलग-अलग जमीन है, तो लोगों के स्वार्थ भी अलग-अलग हैं और इसलिए आपस में उनमें लड़ाई भी होती रहती है। लड़ाई-झगड़े और मुकदमेबाजी से गरीबी और बढ़ती है। इसलिए जब ग्रामदान कर रहे हैं, तो गरीबी की जड़ को भी समूल उखाड़ कर फेंकना होगा, तभी ग्रामदान सफल होगा। आप कहते हैं, खादीग्राम तो हमारा है और इस ग्रामदान के बाद उनकी मदद हमें मिलती रहेगी। लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि खादी-ग्राम अधिक दिन तक आपकी मदद में नहीं आयेगा। अगर आप हमेशा खादीग्राम के भरोसे रहेंगे, तो एक दिन वह भी आपका शोषण करेगा। अतः आप शुरू में हमारी मदद और सलाह भले ही ले लें, परन्तु आपको अपने गाँव को स्वावलम्बी ही बनाना होगा!

एक दूसरे गाँव का उदाहरण मैं यहाँ पेश करता हूँ। आप जानते हैं कि खिरिया (मुंगेर) में क्या हुआ? सारे गाँव के लोगों ने सरकार से सिर्फ १७०० सौ रुपया लेकर ऐसा काम किया कि कोई नहीं कह सकता है कि यह काम ५००० रुपये से कम का है। वे लोग आधा पेट खा कर काम करते थे, क्योंकि उसके साथ उनका जीवन बँधा हुआ है। पर अगर कोई ठेकेदार रहता, तो जैसा-तैसा करके चल देता और उस गाँव को उस काम से कुछ फायदा भी नहीं होता। अगर गाँव में अलग-अलग स्वार्थ रहेगा, तो भी काम नहीं बन सकता। ग्रामदान से यह होगा कि आपस की वैमनस्यता के कारण जो बरबादी होती है, वह नहीं होगी और आपस में पारिवारिक सम्बन्ध बढ़ने के कारण पैदावार बढ़ेगी। इसीलिए तो कहा गया है कि "जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना।"

इस गाँव में सिर्फ २२ एकड़ जमीन है। उसमें से १६ एकड़ जमीन परती और पथरीली है। अब तक किसीकी हिम्मत नहीं हुई कि इसे तोड़ कर आबाद करें। यहाँ १२ परिवार हैं और सब मिल कर यहाँ की जन-संख्या ६० आदमियों की है। अब उस जमीन को सब मिल कर तोड़ेंगे। पहले सारे गाँव के लोग एक परिवार से शुरू करके धीरे-धीरे सब परिवारों की जमीन को आबाद कर लेंगे। सब मिल कर तोड़ना शुरू करेंगे, तो हिम्मत भी बढ़ेगी। ग्रामदान सिर्फ समझने की चीज है। आपके गाँव का पैसा बाहर जाना बन्द हो जाय, यही आपके लिए सबसे बड़ी मदद है। बाहर का कर्ज लेकर हम घर बनायें और झगड़ कर अपने घर की सम्पत्ति बाहर भेज दें, तो उससे फायदा क्या होगा? झगड़ा होता है, तो सारे गाँव के लोग बैठ कर गाँव में तय करेंगे कि इस झगड़े का निर्णय क्या होगा? इस तरह गाँव में झगड़ा तय हो जाने से जो पैसा सरकारी कोर्ट और दलाल के पाकेट में जाता है, वह बच जायेगा, जो बाहर की मदद से काफी ज्यादा होगा।

आप राजघाटवाले मिल कर कमायें और भरोसा खादीग्राम वाले पर करें, यह कहाँ तक ठीक है? आप नजदीक हैं, तो आपके झगड़े वे थोड़ी देर के लिए मिटा भी देंगे। पर अगर सिकन्दरा गाँव में झगड़ा होगा, तो कौन मिटायेगा? आप यह जान लीजिये कि दूसरे आदमी को जहाँ आपने अपने गाँव में घुसाया कि आपके गाँव का नाश अवश्य होगा! इस तरह झगड़ा मिटाने वाले तो एस० डी० ओ० कचहरी में बैठे ही हैं। तो क्या आप चाहते हैं कि हम दूसरा एस० डी० ओ० तैयार करें? मैंने तो आज से ५ साल पहले ही अपने भाषण में कहा था कि अगर आप मेरे भरोसे रहोगे, तो मैं आप लोगों को चाट जाऊँगा! अगर आप खादीग्राम के भरोसे रहे, तो भी आप बर्बाद हो जायेंगे। इससे तो अच्छा यह होगा कि जैसा आप पहले थे, वैसा ही रहें। इसलिए यहाँ जो कुछ आप करते हैं, अपने भरोसे करें और जिस दिन यह समझ लेंगे कि दूसरे लोग हमारे सलाहकार के रूप में भले ही आयें, सहारा देने के लिए नहीं; उसी दिन आपका ग्रामदान सफल होगा। आप यह जान कर भी अगर अपने दिलों को नहीं मिलायेंगे, तो आपकी जमीन भी नहीं मिलेगी, वह टुकड़ों में ही बँटी रहेगी। पर दिल मिलेगा, तो आपकी जमीन भी आप-से-आप मिल जायेगी। आप समझ लें कि जो सलाह आपको खादीग्राम से मिले, वह आप जरूर लें, लेकिन अपनी हिम्मत पर आप काम करेंगे, तभी आपका ग्रामदान सफल होगा।*

* ग्रामराज-समारोह, राजघाट (मुंगेर) के भाषण से, १५-६-'५७

सरकारें कैसे समाप्त होंगी?

(विनोबा)

बार-बार मैं कहता हूँ कि सरकारों को समाप्त होना है। यह तो मंत्र जैसी चीज है। उसका अर्थ समझना चाहिए। हमारे कार्य में बीच-बीच में सरकारों की मदद मिलेगी, कुछ हम लेंगे भी, परन्तु हमको निरंतर यह चीज सामने रखनी चाहिए कि **सरकारें समाप्त होनी हैं याने लोग ही अपने त्राता बनें**। लोक-कार्य में बहुत बड़ी बात है डिफेन्स की। यह नहीं करेंगे, तो लोग अनाथ बन जायेंगे। इस वास्ते देश की रक्षण-शक्ति याने स्थान-स्थान में रक्षण की शक्ति होनी चाहिए। यह जो मैं रक्षण-शक्ति की बात कर रहा हूँ, वह शांति-सेना की बात है। दूसरी सेना से याने हिंसक सेना से, इसमें फरक है। शिस्त वगैरह कुछ बातें तो दोनों में समान होंगी, परन्तु दूसरी कुछ ऐसी बातों में वह भिन्न स्वभाव की है। हिंसक सेना ज्यादा दूर तक अच्छा काम कर सकती है, क्योंकि वहाँ गोली चलानी पड़ती है। परिचय न हो, तो ज्यादा अच्छा कार्य होता है। इसी वास्ते अंग्रेजों ने दो टुकड़े किये थे। परन्तु यह अहिंसक सेना परिचय के क्षेत्र में ही खूब काम कर सकती है। जहाँ खूब काम किया हो, सेवा की हो, वहीं वह काम कर सकती है। यह नहीं कि यहाँ का कोई शख्स फ्रान्स में जाय और वहाँ शांति-सेना का काम करे। हाँ, ऐसा वह कर सकता है, जिसके पास व्यास भगवान् के समान नैतिक शक्ति है। ऐसे लोग दूसरे स्थान पर जाकर भी सेवा कर सकते हैं। बाकी उस-उस स्थान के लोग ही सेवा के लिए उस-उस स्थान में जा सकेंगे।

शांति-सेना का काम यही होगा कि वे उस-उस स्थान की शांति का भंग न होने दें। उनका काम प्राकृतिक चिकित्सा के समान है। प्राकृतिक चिकित्सा में रोग न हो, इसीका खयाल किया जाता है। इस पर भी रोग हुआ, तो उस पर इलाज है, शरीर-शुद्धि का। तो अशांति न होने देना ही हमारा प्रयास रहेगा। इस पर भी अशांति होती है, तो ऐसे समय हमारा बलिदान देना हमारा कर्तव्य हो जाता है। शांति-सेना नित्य काम तो सेना का करेगी, परन्तु विशेष अवसर पर वह शांति का काम करेगी। सारे लोगों में हमारे सेवक बँटे रहेंगे। उनकी तालीम के लिए योजना करते रहेंगे और वह एक रेग्युलर सर्विस चलती रहेगी। भूदान, ग्रामदान, साहित्य का प्रचार करेंगे, स्वच्छता सिखायेंगे, रोगियों की सेवा करेंगे। इस प्रकार की तरह-तरह की सेवा का ज्ञान उनको होगा। लोगों का उन पर विश्वास बैठेगा। कोई भी कठिनाई है, तो तुरन्त वे सेवकों को बुलायेंगे। हमारे सेवक हमको कभी भी मदद करने के लिए तैयार हैं, ऐसा विश्वास उनको होना चाहिए। कोई भी सेवा करने के लिए सदा-सर्वदा तैयार! किसी बुढ़िया का लड़का बीमार है। रात को जागना है; बुढ़िया बुलायेगी, वह जायगा, रात भर जागेगा, सेवा करेगा। ऐसे हृदयवान् सेवक होंगे। उनका ज्ञान बढ़ाने के लिए रिफ्रेशर कोर्स का इंतजाम करना चाहिए। रिफ्रेशर कोर्स में सेवा-कार्य उत्तम-से-उत्तम कैसे हो सकता है, इसका ज्ञान कराया जायगा। इस तरह हम सर्वोदय स्थापन कर सकते हैं।

सर्व-पक्ष-मुक्त और सदा-सर्वदा सेवा के लिए तैयार ऐसे सेवक, यह कल्पना नयी है। कुछ लोग पार्टी से मुक्त हैं, परन्तु वे विशिष्ट सेवा करते हैं। लेकिन ये सेवक हर सेवा के लिए तैयार रहेंगे। गधे पर कोई कितना ही बोझ डाल सकता है। ऐसे १००० सेवक यहाँ तैयार करने हैं। उनके लिए शिक्षण और योगक्षेम की योजना करनी चाहिए। भू-दान, ग्रामदान का काम इन सेवकों से तो होगा ही, परन्तु आगे का काम भी इनसे होगा। उनका नियंत्रण शहरों पर भी होगा। ज्यादातर शहरों में ही झगड़े-बखेड़े अचानक हुआ करते हैं। ये एस्० आर्० सी० के झगड़े सारे-के-सारे शहरों में ही हुए। हमारी कल्पना ही उनके पास नहीं पहुँचती। इसलिए यह स्वाभाविक है कि हम ग्रामसेवक ग्राम की सेवा तो करेंगे, परन्तु शहरों की उपेक्षा करना हमारे लिए ठीक नहीं है। शहरों की भी खूब सेवा होनी चाहिए। वहाँ संपत्ति-दान, साहित्य-प्रचार काफी चलना चाहिए। उससे लोगों के साथ हमारा संपर्क बना रहेगा। शहरों से जो संपत्ति-दान मिलेगा, वह शहरों में ही खर्च नहीं होगा, उसका कुछ अंश वहाँ खर्च होगा, परन्तु ज्यादा पैसा गाँवों की सेवा में लगेगा। वहाँ तो वैसे ही सेवक मिलेंगे। कॉलेज के विद्यार्थी हैं, उनका घर वहीं है, लोगों की सेवा करते हैं। संपर्क रखने के लिए सर्वोदय-मंडल है ही। उस शहर में भी एक मित्र-मंडल बन सकता है। यह मित्र-मंडल, संपत्ति-दान-दाता और सर्वोदय-मंडल एक हो जायँ। इस तरह मुख्य-मुख्य जो शहर हैं, उनको अपने कब्जे में लेना चाहिए। इसलिए शांति-सेना के सेवकों की शक्ति बढ़ाने के लिए जोर लगाना होगा। वह करना चाहिए।

(कोलीकोड़, १४-७)

www.vinoba.in

केरल की क्रांति-यात्रा से–

(महादेवी)

उस रोज विनोबाजी का पड़ाव कोलीकोड़ (केरल) जिले के वेलीनेली नामक ग्राम में था। चारों ओर से सुन्दर हरे-भरे पहाड़ों से घिरा हुआ, आम, नारियल, ताल और कदली वृक्षों से घना भरा हुआ, उस दिन का वह निवास एक ऊँची चट्टान पर खड़ी, विद्यालय की इमारत में ही था। चारों ओर बिछे हुए धान के खेतों के कारण पुण्यमयी प्रकृति और भी अधिक प्रेरक प्रतीत हो रही थी। केवल देना ही जानने वाली इस प्रकृति की गोद में पलने वाले प्राणी को इशावास्यम् के सिवा और अन्य विचार कैसे छूते ? 'त्यक्तेन भुंजीथाः' की भावना के अतिरिक्त और भाव का परस भी क्यों होना चाहिए ?

पदयात्रा में ऐसे सज्जनों का नित नया-नया सु-दर्शन भी होता ही रहता है, जिनसे मिल कर हृदय भक्तिभाव से भर आता है। ऐसे ही एक व्यक्ति सपरिवार विनोबा से मिलने आये। उनके अंग-प्रत्यंग से प्रेम और करुणा का भाव निखर रहा था। वेदों की ऋचाओं में गढ़े अपने नेत्रों को विनोबाजी ने किंचित् समय के लिए ऊपर उठा कर स्नेह की निगाहों से उस परिवार की ओर देखा। करुणाकरजी ने तत्काल विनम्र भाव से एक दानपत्र बाबा के चरणों में भेट करते हुए कहा : "आप हमारे गाँव आये हैं। हमारे पास देने को आपके योग्य क्या है ? फिर भी जो कुछ है, यह सब आपको समर्पित है।" अंतिम शब्दों का उच्चारण करते समय करुणाकरजी की करुणा उनकी आँखों में साकार हो उठी। अपने भावों को वे ठीक से प्रगट भी न कर सके। दाता ने अपनी अच्छी धान की जमीन, तीस एकड़ सब-की-सब प्रदान कर दी थी। पत्नी ने भी अपनी तीन एकड़ की मालकियत समर्पण की थी। संपत्ति सारी स्वार्जित थी, पैतृक नहीं थी।

जमीन पर दस हजार का कर्ज भी है। जमीन का मूल्य इस कर्ज से कितना ही अधिक है–रुपयों पैसों में भी, और वैसे भी। तीन-चार वर्षों के सामूहिक प्रयत्नों से भूमि कर्ज-मुक्त हो सकती थी ! परंतु दाता की इच्छा थी कि शुद्ध, वेदाग दान ही बाबा को भेंट किया जाय। पति की इस अस्वस्थता को पत्नी ने पहचान लिया था। गाँव के बीचोबीच बाजार में एक मकान उसके नाम पर था, जिसका किराया करीब सौ रुपया आता है। देहात में सौ रुपया मामूली बात नहीं। पत्नी ने पहले रोज रात को अपने पति से कहा, "आप चिंता क्यों करते हैं ? वह मकान बेच दीजिये, कर्जा चुका दीजिये और बाबा को जमीन कर्ज मुक्त ही दीजिये।" अपनी सहधर्मिणी के दृढ़त्व और औदार्य से करुणाकर भी प्रभावित हुए। पत्नी ने उन्हें और आश्वासन दिया, "आप जिनको जमीन देंगे, वे लोग क्या हमें भूखों मरने देंगे ?"

तब करुणाकर उस रात सुख से सो सके थे और यह सारा बल लेकर विनोबाजी के संमुख उपस्थित थे। विनोबाजी को यह कहानी पहले ही सुना दी गयी थी। इसलिए विनोबाजी ने उस वीरांगना को पूछा : "आपको पूर्ण संतोष है न ?" 'जी !' वीरपत्नी के मुख से पुनः अपने पति के धर्म-कार्य के लिए बल प्रगट हुआ।

शाम की प्रार्थना-सभा में विनोबाजी ने इस पावन प्रसंग का उल्लेख किया। आकाश से भी उस समय अमृत-बिंदुओं की वर्षा हुई। बूंदें कुछ रुकी ही थीं कि विनोबाजी भक्त की कुटिया की ओर निकल पड़े ! दंपति और बच्चे भी प्रार्थना होते ही आगे हो लिये और विनोबाजी के कुछ ही क्षण पहले घर पर पहुँच पाये। उन चंद क्षणों मे ही बलि ने द्वार पर वामन का भाव भरा स्वागत किया। विनोबाजी ने भीतर प्रवेश किया, तो देखा कि छोटे-से घर में एक ओर गीताकार भगवान् गोपाल कृष्ण की छबि कमरे को आलोकित कर रही थी, तो दूसरी ओर महात्माजी का चित्र सबके चित्त को आकर्षित कर रहा था। इन दोनों के बीचोबीच विनोबा की प्रसन्न प्रतिमा प्रकाशित हो रही थी। छोटा-सा मंदिर जिसमें दीप-ज्योति प्रज्वलित थी। मुरलीधर खड़े-खड़े अद्वैत का स्मरण दिला रहे थे। ऐसी संस्कारिता प्रगट करने वाली वह कुटिया, जो धान की लक्ष्मी के बीचो-बीच खड़ी थी, आज धन्य हो रही थी !

पाँचों बच्चों ने विनोबाजी को घेर लिया था। विस्मित वदन वे कौतुकपूर्वक उनको निहार रहे थे। विनोबाजी ने उनके भीतर के भगवान् को भी जगा दिया। पूछा : "अरे बच्चो, तुम्हारे पिता ने सारी जमीन हमें दे दी है। तुम्हे मंजूर है न ?"

ध्रुव और प्रह्लाद की परंपरा के वे बच्चे–पाँचों पांडवों की तरह प्यारे–फौरन एक स्वर से बोल उठे, "जी, हमें मंजूर है।" विनोबाजी तो आये और लौटे। सब कुछ देकर भी करुणाकरजी को लगा : अतिथि का कोई स्वागत नहीं हुआ। एक ही वाक्य उनके भरे हृदय से निकल सका–"आज यह 'श्रीनिलयम' यथार्थ में धन्य हुआ।"

हरिजन-समस्या का सही हल

प्रश्न : समाज में हरिजनों को अलग रखते हैं। होटल में भी नहीं आने देते। तो क्या किया जाय ?

विनोबा : उनको नहीं आने देते तो दूसरे जो लोग हैं, वे भी वहाँ न जायँ। यही उसका तरीका हो सकता है। वे लोग कहें कि "मैं भूखा हूँ, इसलिए मैं आपकी दूकान में आता हूँ। मेरे जैसा वह भी भूखा है, लेकिन उस भूखे को आप खिलाते नहीं हो। मुझे भी तो भूख है। आप भूखे को खिलाते नहीं हैं, तो मुझे क्यों आना चाहिए ?"

कूएँ पर पानी भरने नहीं देते, तो दूसरे लोग भी न जायँ। पानी न पीयें। ये संन्यासीजी हरिजन-सेवक-संघ के कार्यकर्ता हैं, वे भी उस कूएँ पर न जायँ। जब तक आपको पानी नहीं मिलता, तब तक यह पानी नही पियेगा। स्वामी को मरने दो बिना पानी के। फिर देखो, एक स्वामी के बलिदान से कुल कूएँ खुल जायेंगे।

प्रश्न : शहरों में भंगी-काम करने वाले ज्यादातर हरिजन हैं। उस प्रथा को मिटाने के लिए क्या किया जाय ?

विनोबा : गांधीजी के मरने के पहले मैं एक गाँव में भंगी का काम करता था। रोज घंटा-डेढ़-घंटा काम चलता था। पहले लोग रास्ते पर बैठते थे। वहाँ मिट्टी डाल कर फिर वह फावड़े से उठा कर खेत में डालता था और उसको मिट्टी से ढँक देता था। रोज यह काम चलता था। फिर गाँव के लोग भी मदद में आने लगे। लेकिन एक दिन मैं उस गाँव में गया और देखा कि गाँव बिलकुल साफ है। मैंने गाँववालों से पूछा, "आज फसल क्यों नहीं आयी है ?" लोगों ने जवाब दिया, "आज गणेश-चतुर्थी का दिन है, तो गाँववालों ने सोचा कि आज गणेश-चतुर्थी के दिन बाबा को काम नहीं करने देंगे !" इतना परिवर्तन बाद में हो गया था। काम खंड चला, तो परिणाम यह हुआ कि लोग फिर पैखाने में जाकर बैठने लगे, मिट्टी डालने लगे। लोगों में सुधार हो गया।

इस वास्ते अगर भंगी-काम को मिटाना चाहते हो, तो जवानों को सामने आना चाहिए और इस काम को उठाना चाहिए। पैखानों में सुधार करने होंगे। अगर अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे, सुशिक्षित लोग यह काम करने लगेंगे, तो सरकार को पैखाने की पद्धति में अवश्य सुधार करना पड़ेगा और वह करेगी। इस विषय में दूसरा काम हमको यह करना चाहिए कि **आज जो भंगी-काम करते हैं, उनके बच्चों को भंगी-काम करने की मनाही होनी चाहिए। सरकार का उस तरह का कानून होना चाहिए। नहीं तो वैसा लोकमत तैयार करना पड़ेगा। उन बच्चों को दूसरे धंदे सिखाने चाहिए।** भूमिदान में जो जमीन मिली है, उसमें से भंगियों को जमीन मिल सकती है। वे जमीन की काश्त करेंगे। दूसरे धंधे भी करेंगे। उनके लिए तालीम का इन्तजाम होना चाहिए। उनको वेद, उपनिषद सिखाना होगा। इस तरह उनको नया धंधा और अध्यात्म-विद्या सिखानी होगी और इस धंधे से उनको मुक्ति देनी होगी। भंगी प्रथा को खतम करने के लिए दो अपील हैं, जो मैंने आपके सामने रखे हैं।

(हरिजनों के साथ, कोलीकोड़, केरल, १३-७-'५७)

…हमें यह स्वीकार करना होगा कि पूँजीपति भी चेतनायुक्त प्राणी है और समझाने पर वह उचित एवं संगत बात को स्वीकार कर लेगा। इससे यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि नयी आर्थिक व्यवस्था कायम करने के लिए हमें पूँजीपतियों के सामने घुटने टेक कर गिड़गिड़ाना और प्रार्थनापत्र उपस्थित करन होगा, क्योंकि मार्क्स ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि किसी वस्तु को प्राप्त करने का यह तरीका नहीं है, केवल पार्लमेंटरी उपायों से बहुत ज्यादा लाभ नहीं हो सकता। शिक्षा द्वारा जनता का मन परिवर्तित कर उनमें जागृति उत्पन्न करना होगा और अहिंसा के सिद्धांत के आधार पर इस तरह का व्यापक आन्दोलन खड़ा करना होगा कि जिसके प्रभाव से कठोर से कठोर हृदय पिघल जाय और जनमत के सामने झुक जाय।

इस तरह की शांतिमय और अहिंसक क्रांति आवश्यक और अनिवार्य है। हिंसक क्रान्ति से उद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती, क्योंकि हिंसा से प्रतिहिंसा का उदय होता है और इससे अत्याचारी के हृदय में किसी तरह का पवित्तन नहीं हो सकता।

अहिंसक क्रान्ति का प्रभाव व्यक्ति के मस्तिष्क और चेतना पर पड़ता है और हिंसक क्रांति पशुबल को निमंत्रण देती है। मार्क्सवाद भौतिकता का उपासक है। उसकी दृष्टि में नैतिकता का कोई मूल्य नहीं, इसलिए वह पशुबल पर ही निर्भर कर सकता है और हिंसक क्रांति की ही प्रेरणा देता है।

('पूँजीवाद, समाजवाद, ग्रामोद्योग' से) —भारतन् कुमारप्पा

---

www.vinoba.in

केरल-यात्रा से–

(गोविंदन्)

ता. १०-६-'५७ को हमारा पड़ाव गांधी-सेवासदन, पेरूर में था। श्री कुमारन् उस संस्था के जन्मदाता हैं। सन् '४२ के आंदोलन में उन्होंने हिस्सा लिया था। "ओणम्" का त्योहार केरलवालों के लिए बहुत ही महत्त्व का दिन है। वह मौका देख कर जेल से वे भाग गये। लेकिन घर पर पहुँचने के पहले मद्रास में ही उस जेल के एक वॉर्डर ने देखा और उनको पुनः कैद कर लिया। इस बार बेड़ी पहनायी गयी। फिर भी वे शीर्षासन, मयूरासन, सर्वांगासन आदि कर लेते थे।

स्वामी सेवानंद भी एक ऐसे ही साथी हैं, जिनका पुराना नाम अनंत कृष्ण ऐयर है। वे बंबई में काम करते थे। ९ अगस्त '४२ को वे इस्तीफा देकर पैदल ही घर लौट रहे थे, तो उनको कोयंबतूर के नजदीक कैद करके अलिपुरम् जेल में डाल दिया। जेल से ही उन्होंने अपना नाम बदल कर सेवानंद रखा। कुमारन्जी और सेवानंदजी पहले आपस में नफरत करते थे, पर एक दिन कुछ बातचीत की, तब से वे बड़े मित्र बन गये। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जेल से छूटने के बाद किसी गाँव में जाकर गाँव की सेवा करेंगे।

दोनों जेल से छूट कर आये और कुछ लोगों से जमीन माँगी, फिर अपना सेवा-कार्य करने लगे। इस तरह सन् १९४६ में वहाँ कुछ सेवाकार्य शुरू किया। ८-१० अनाथों को पालने-पोसने, सिखाने-सुलाने से लेकर काम का आरंभ हुआ। धीरे-धीरे काम बढ़ता गया। लोगों से कुछ फंड इकट्ठा किया और खादी-ग्रामोद्योग-शिक्षण आदि का भी काम उठा लिया। अब वहाँ बुनियादी प्रशिक्षण-केंद्र, बुनियादी, उत्तर बुनियादी, बालवाड़ी आदि काम भी चलते हैं। केरल में रचनात्मक काम करने वाली संस्थाओं में यह आश्रम पहला स्थान रखता है। अब वहाँ करीब २०० से भी ज़्यादा लोग रहते हैं। आसपास के बच्चे वहाँ आकर पढ़ते हैं।

आश्रम का स्थान भी बहुत सुंदर है। रेलवे-स्टेशन नजदीक है। "भारत पुळा" नामक एक नदी पास ही बहती है। टीले-पत्थरवाली जमीन की सेवा करके कुमारन् और सेवानंदजी ने जंगल को मंगल बनाया। सेवानंदजी ने तो सन् '५२ में परंधाम आश्रम-पवनार में छः महीने रह कर कांचन मुक्ति का ही व्रत लिया था। जब संस्था इतनी बढ़ गयी, तो स्वामीजी मौन धारण करके एकांत में साधना करने लगे। यह समाचार विनोबाजी को सुनाया गया। विनोबाजी ने स्वामीजी को सुनाने के लिए यह संदेश दिया था: "नाम तो सेवानंद रखा है। भूदान के जरिये इतनी अच्छी सेवा हो सकती है, तब मौन धारण किया है। वे सेवानंद कैसे होंगे? वह तो मौनानंद हो सकता है।"

विनोबाजी ने संस्था का दर्शन किया और आखिर पूछा: "स्वामी सेवानंद कहाँ हैं?" जवाब मिला कि वे यहाँ से ३ फर्लांग दूरी पर "सुदामा कुटी" में रहते हैं। तुरंत विनोबा उस तरफ निकले। दरअसल वह "सुदामा कुटी" ही थी। चारों तरफ मैदान है, दक्षिण में नदी बह रही है, उत्तर में रेलवे लाइन है। उस कुटी की चारों तरफ फूल लगाये हैं। कुटी में एक कमरा है, अतिथि-सत्कार के लिए एक चबूतरा है। कमरे के अंदर श्रीकृष्ण का एक सुंदर पुतला रखा है और भागवत आदि चुने हुए तीन ग्रंथ हैं। स्वामीजी २ घंटा सूत कातते हैं। बाकी समय उन तीन ग्रंथों का अध्ययन और भजन करते रहते हैं। दिन में एक बार खाते हैं, जो उस संस्था में आम लोगों के लिए बनता है। शाम को किसीने दूध या केला लाकर दिया, तो सबको बाँट कर एक हिस्सा खाते हैं। इसलिए बहुत ही दुबले बन गये थे। विनोबाजी ने यह सारा देखा। लौटते समय विनोबाजी ने हँसते हुए कहा, "स्वामीजी आप तो कृष्ण-भक्ति करते हैं, लेकिन यह शिवभक्ति दीखती है! कृष्ण तो हट्टाकट्टा था, मजबूत था, दूध-मक्खन खूब खाता था, दोस्तों को खिलाता था। आप तो बिलकुल सूखे दीखते हैं, जैसे भिखमंगे शिवजी हों!"

इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने सबका वेतन एकत्र करके सारा खर्च समान-रूप से करने का निश्चय किया। जिनके घर-परिवार उस संस्था में नहीं रहते, उनके वास्ते अपने वेतन का ३० प्रतिशत घर भेजने की भी सुविधा रखी है। अलावा इसके सबने मिल कर संपत्तिदान भी दिया है। उस तालुका के भूदान का काम इन लोगों ने उठा लिया है। इनके प्रयत्न से ३ ग्रामदान वहाँ मिले हैं।

बिहार के भूवितरण-अभियान का विवरण

तीन वर्षों के प्रयत्न से कुल १,६७,५९२ एकड़ जमीन बिहार में बँट सकी थी। १८ अप्रैल '५७ को, एक ही दिन में ३२२८ गाँवों में ४५,५५८ एकड़ जमीन का वितरण संपन्न हुआ। आम चुनाव के बाद होली का त्यौहार आ पहुँचा और उसकी समाप्ति के बाद १८ अप्रैल के कार्यक्रम के लिए मुश्किल से एक महीने का समय मिल सका। इस बीच १८ अप्रैल के कार्यक्रम को संपन्न करने के लिए प्रांत भर में ५५ शिविर समारोह के साथ संपन्न हुए। सभी शिविरों का आयोजन स्थानीय लोगों ने स्वागत-समिति बना कर और खर्च के लिए स्थानीय दान प्राप्त करके किया था। इन शिविरों में लगभग चार हजार कार्यकर्ताओं ने और ढाई लाख लोगों ने शिविर के साथ आयोजित आम सभाओं में भाग लेकर भूदान-यज्ञ का और खासकर १८ अप्रैल के कार्यक्रम का संदेश सुना। शिविरों द्वारा प्रांतव्यापी भूवितरण का जो कुछ आयोजन हो सका, उसके अलावा एक लाभ यह हुआ कि चुनाव में फँसे हुए अनेक लोग भी इन शिविरों में भूवितरण-कार्य के लिए इकट्ठे हुए थे। जो कुछ कार्य हो सका, उसमें स्थानीय लोगों एवं विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के सहयोग का भी बड़ा हिस्सा रहा। सारे प्रांत के काम के अनुभव से यह कहा जा सकता है कि प्राप्त होने वाले सहयोग का संयोजन जहाँ कार्यकर्ताओं ने किया, वहीं काम हो सका। विभिन्न संस्थाओं ने गश्ती चिट्ठी निकाल कर अपने कार्यकर्ताओं को इसके लिए प्रेरित किया था। पर देखने में यह आया कि जिन संस्थाओं की ओर से गश्ती चिट्ठियाँ निकाली गयीं, उनके भी वे ही कार्यकर्ता इस काम में लग सके, जिनकी अभिरुचि इस कार्यक्रम में थी। फिर भी भूदान-कार्य में पूरा समय देने वालों के सिवा बिहार-खादी-ग्रामोद्योग-संघ, ग्राम-पंचायत, शिक्षक, विद्यार्थी, राजनीतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं तथा अन्य संस्था के कार्यकर्ताओं का सहयोग स्थान-स्थान में प्राप्त हुआ और इन सबके सहयोग से ही इतना कार्य भी संपन्न हो सका।

इन शिविरों में तथा शिविरों के साथ होने वाली आम सभाओं में कुल ५५५ नये कार्यकर्ता मिले। इनके अलावा ८३६ विद्यार्थियों ने भूदान-कार्य के लिए समयदान दिया है। इनमें से अधिकांश ने एक वर्ष का समयदान किया है।

पूर्णियाँ जिले के ढोलबज्जा गाँव में १८ अप्रैल को करीब ८० एकड़ भूमि के वितरण की घोषणा दाताओं से ब्यौरा न मिलने के बावजूद वितरण-सभा में की गयी। इस पर दाताओं द्वारा कार्यकर्ताओं को पीटा गया। मार खाने वालों ने ग्रामीणों के विरुद्ध मुकदमे नहीं किये। इसका असर लोगों पर अच्छा हुआ था और २८ अप्रैल को आयोजित सभा की सफलता के लिए उन्हीं ग्रामीणों ने स्वागत-समिति संगठित की। सब कार्यकर्ताओं को ग्रामीणों ने अपने घरों में ठहराया और खिलाया भी। आम सभा में वहाँ की घटना के लिए ग्राम-पंचायत के मुखियाजी ने गाँव की ओर से माफी माँगी। भूवितरण करने और गाँव की भूमिहीनता मिटाने की दृष्टि से एक कमिटी भी गाँववालों ने बनायी। १५ जून को दाताओं से ब्यौरा प्राप्त करके ढोल-बज्जा गाँव की १७४ एकड़ भूमि ७६ भूमिहीनों में बाँट कर गाँव की भूमिहीनता मिटाने की प्रतिज्ञा गाँववालों ने ही पूरी की। उस समय भी पूरी जमीन का ब्यौरा तो नहीं मिला था, पर बाद में बहुतांश ने आकर विवरण दे दिया! इस घटना का प्रांतव्यापी असर हुआ।

१८ अप्रैल के भूवितरण के अवसर पर बिहार में ३१४ दाताओं से २२५ एकड़ भूमि का नया दान भी मिला। २८२९) का सर्वोदय-साहित्य बेचा गया तथा "भूदान-यज्ञ" के १०० नये ग्राहक बने। ४५,५५८ एकड़ भूमि बाँटी गयी, इसके सिवा ८३,००० एकड़ भूमि की जाँच की गयी, जो वितरण के योग्य नहीं थी। इस प्रकार, जो काम १८ अप्रैल के निमित्त से हुए, उनको संपन्न करने में जितनी शक्ति उपलब्ध हो सकी, उसके अनुपात में वे बहुत कम नहीं कहे जा सकते हैं। इस कार्यक्रम में जितनी सफलता मिली, प्रांत में जो वातावरण तैयार हुआ है, नये कार्य-कर्ताओं की जो फौज मिली है, उस सबका ठीक से संयोजन हो सका, तो प्रांत में मिली भूदान की सारी जमीन को वितरित करने का जो कार्यक्रम श्री विनोबाजी ने हम बिहारवासियों के लिए निर्धारित किया है, आशा है, बहुत शीघ्र उसकी पूर्ति हो सकेगी।

पटना: २३-७-'५७ —(बिहार सर्वोदय-मंडल द्वारा प्रेषित)

---

www.vinoba.in

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

—वर्धा शहर से करीब ७ मील पर सेलसुरा गाँव में ३१ जुलाई को ग्रामदान की सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में **श्री राधाकृष्ण बजाज, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनसूयादेवी और बच्चों ने अपने-अपने नाम की खेती की सारी की सारी बढ़िया ज़मीन, करीब ५० एकड़ ग्रामदान के रूप में समर्पण कर दी है।** इसी सभा में काँग्रेस के महामंत्री श्री श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल, प्रमुख भूदान-कार्यकर्ता श्री ठाकुरदास बंग तथा श्री मनोहरजी दीवान ने ग्रामवासियों को श्री बजाजजी के दान से प्रेरित होकर ग्रामदान करने के लिए प्रेरणा देकर आवाहन किया।

—२६ जुलाई को हरिजन छात्रावास, **इंदौर में भूदान-कार्यकर्ता-संमेलन** में भूदान और ग्रामदान की गतिविधियों पर श्री बाबा राघवदासजी की उपस्थिति में विचार-विनिमय हुआ। मुख्य रूप से चर्चा में भाग लेने वाले सर्वश्री खोड़ेजी, देवेन्द्र गुप्ता, शंकरलालजी मंडलोई और लक्ष्मीचन्द जैन आदि थे। तय हुआ कि म. भा. क्षेत्र में प्राप्त समस्त भूमि जल्दी-से-जल्दी बाँट दी जाय।

—ता २८ जुलाई को पत्रप्रतिनिधियों से चर्चा करते हुए **श्री बाबा राघवदासजी ने कहा** कि वे राज्य के डाकूग्रस्त क्षेत्र, भिण्ड और मुरैना जिलों का भ्रमण करेंगे तथा भूदान द्वारा डाकुओं का हृदय-परिवर्तन करने की दृष्टि से वहाँ की स्थिति का अध्ययन करेंगे। तेलंगाना में भूदान-आंदोलन अत्यधिक सफल रहा है और ऐसा कोई कारण नहीं है कि वह मध्यप्रदेश के अभावग्रस्त क्षेत्रों में भी सफल न हो। भूदान का उद्देश्य केवल भूमि का वितरण ही नहीं है, बल्कि जनता का हृदय-परिवर्तन करना भी है।

—श्री बाबा राघवदासजी की निमाड़ तथा इंदौर (मध्यप्रदेश) जिलों की पद-यात्रा समाप्त हुई। ता० २७ जुलाई को उज्जैन में खादी-ग्रामोद्योग-कार्यकर्ताओं के संमेलन में भाग लेकर २८ जुलाई से उन्होंने भोपाल-रायसेन जिलों की पदयात्रा प्रारम्भ की।

—**श्री बाबा राघवदासजी की रतलाम जिले की पदयात्रा** ता०१३ अगस्त से धराड़ ग्राम से शुरू हुई। कार्यक्रम इस प्रकार है : ता. १४ रूपाखेड़ा, १५ प्रातः आलनीया, ११ बजे रतलाम नगर में प्रवेश करेंगे। ता. १५-१६ को रतलाम में विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगे। ता १७ प्रातः बंजली, ११ बजे धामनोद, ता. १८ सैलाना, ता. १९ पंचेड़ और नामली, ता. २० मेवासा और इसनपालिया, ता. २१ चौरासी बड़ायला और सादाखेड़ी, ता. २२ नोगदी, सुबह १० बजे जावरा पहुँचेंगे। विशेष जानकारी व पत्रव्यवहार का पता—मार्फतः भूदान-यात्री, आचार्य दीपचंद जैन, सेठजी का बाजार, रतलाम (मध्यप्रदेश)

—पूर्णियाँ जिले के १५ जुलाई से चलने वाले संगीत-शिविर का समापवर्तन-समारोह श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरीजी के तत्त्वावधान में रानीपतरा-आश्रम में हुआ। संगीत-शिविर का संचालन कवि और गायक श्री दुखायलजी कर रहे थे। विभिन्न जिलों के १५ संगीतप्रेमियों ने भाग लिया।

—सर्वोदय आश्रम, रानीपतरा, पूर्णियाँ में प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र भी खुला है।

—नेपाल सरकार के भूतपूर्व प्र. मंत्री श्री मातृका प्रसाद कोईराला से २४ जुलाई को विराट नगर में श्री दुखायलजी ने भूदान के संबंध में चर्चा की। श्री मातृका बाबू ने बताया कि भूदान के लिए नेपाल में अनुकूल परिस्थिति पैदा हो चुकी है।

—**फारबिसगंज-धर्मशाला** में ता. २४ जुलाई को भूदान-कार्यकर्ताओं और प्रेमियों की बैठक हुई। निर्णय के अनुसार २४ जुलाई को १५ कार्यकर्ताओं की टोली भूमि-वितरण और ग्रामदान के लिए निकली है।

—**पलामू** जिले की विभिन्न संस्थाओं और पक्षों के कार्यकर्ताओं और प्रतिष्ठित नागरिकों की बैठक २८ जुलाई को जिला भूदान-यज्ञ-कार्यालय- डालटनगंज में हुई। २५०० गाँवों में भूमि बाँटना है, अतः २५०० प्रतिनिधियों को वितरण-पद्धति समझा दी जायगी। संकल्प किया गया कि गांधी-जयंती, २ अक्टूबर '५७ तक भूदान में प्राप्त जिले की सारी जमीन जनता के सहयोग से बाँट दी जायगी।

—**मुरादाबाद** जिले में श्री विमलाबहन ने ता. २१ जुलाई से २९ जुलाई तक विभिन्न स्थानों में ग्रामदान का विचार-प्रचार किया। २५-२६ जुलाई को **बिजनौर** जिले में भी आपके कार्यक्रम हुए। **चंदौसी** की शिक्षण-संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भी योग दिया। छात्राओं और महिलाओं ने कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अ० भा० विद्यार्थी भूदान-पदयात्रा

१६ जनवरी '५७ को द्वारकापुरी से निकल कर रामकृष्ण परमहंस मठ, कलकत्ता तक जाने वाले शांति और ग्रामदान-संदेश सुनाते हुए श्री अनंत त्रिवेदी और श्रीमती सुशीला त्रिवेदी बनारस जिले में आये। यहाँ श्री बाबुलभाई और सेवापुरी आश्रम के १२ विद्यार्थियों की टोली उनके साथ मिली और यह यात्री-टोली ज्ञानपुर, भदोही आदि के कॉलेजों में भूदान-विचार-प्रचार करते हुए ता० ४ अगस्त को काशी पहुँची। काशी में इस विद्यार्थियों की टोली के साथ गांधी आश्रम के और अन्य भूदान-कार्यकर्ताओं ने तीन दिन तक शहर के विभिन्न स्थानों में विचार-प्रचार किया। सारनाथ के मेले में सामूहिक कताई करते हुए हजारों ग्रामीणों के बीच भूदान-का संदेश सुनाया गया। १५ अगस्त को अजगरा के ग्रामराज-संमेलन में हिस्सा लेकर यह टोली कलकत्ता की ओर आगे बढ़ रही है। ७ माह में यात्रियों ने करीब १४०० मील की यात्रा की। फलस्वरूप २८६ बीघा भूदान, १३५०) वार्षिक के संपत्तिदान-पत्र और १७५) साधन-दान में मिले। ६००) की साहित्य-बिक्री हुई। ११०) अनाज, ४ हल, ७ बैल और १ मकान दान में मिला। भूदान-पत्रों के ७५ ग्राहक बने। यात्रियों का परिचय :

श्री अनन्त त्रिवेदी : सौराष्ट्र के राणपुर गाँव के निवासी। सन् '४२ की क्रांति में पढ़ाई छोड़ कर राष्ट्रीय आन्दोलन में लगे थे। गोवा-मुक्ति-सत्याग्रह में भी हिस्सा लिया। कांचीपुरम्-सम्मेलन से अ० भा० यात्री-दल के साथ पंढरपुर तक यात्रा की।

श्रीमती सुशीला त्रिवेदी : माटुँगा, बंबई की निवासिनी, हिंदी-प्रचारक हैं। दो साल से भूदान-कार्य में लगीं। कांचीपुरम् से पंढरपुर तक अ० भा० यात्री-दल के साथ प्रचार-यात्रा की।

श्री बाबुलभाई : बनारस जिले के भदोही तहसील के अध्ययनशील, मौनसेवी कार्यकर्ता हैं। ये बनारस जिले से कलकत्ता तक यात्रा में साथ रहेंगे।

ग्रामदान का सामूहिक प्रयत्न

ग्रामदान के काम को गति देने की दृष्टि से ता० १० जुलाई से ३० जुलाई तक बैतुल, अमरावती, नागपुर, छिन्दवाड़ा, वर्धा जिलों ने अकोला, चांदा, मण्डारा, बुलढाणा आदि जिलों की सहायता से प्रथम सामूहिक प्रयास किया गया। अमरावती जिले के प्रथम ग्रामदानी गाँव 'वाई' के आसपास के देहातों में काम किया गया। कार्यकर्ताओं को कई कठिनाइयों में से जाना पड़ा। किसीको काले नागराज ने दर्शन दिया, किसीकी नौका उलट गयी, तो कोई घने जंगल में रास्ता भूल गया! इस तरह सारी मुसीबतों को सह कर **अमरावती जिले में दो व वर्धा जिले में एक, ऐसे तीन ग्रामदान कार्यकर्ताओं ने प्राप्त किये।** आचार्य दादा धर्माधिकारी ने इस पदयात्रा का समाप्ति-समारोह संपन्न किया। बैतुल जिले के काँग्रेस-कार्यकर्ता श्री बिहारीलाल पटेल व फॉर्वर्ड ब्लॉक के श्री गणपतराव खाड़े, इन दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में ग्रामदान का काम करने की घोषणा की। इस तरह कार्यकर्ताओं ने बड़े उत्साह से काम किया। उपरोक्त पाँच जिले ग्रामदान की हवा से गूँज उठे। इस सारे कार्य का संगठन श्री गंगाधर पाटणकरजी ने सुचारु रूप से किया।

—**महाकोशल** में जुलाई मास में ७५७ एकड़ भूमि २८ दाताओं से मिली। १५ आदाताओं में करीब ४२ एकड़ भूमि वितरित की गयी।

—श्री बाबूराव कामत श्री विनोबाजी से मिल कर **गुलबर्गा जिले** में आये। आळंद तालुके में तीन दिशाओं में ११ गाँवों की पदयात्रा की। श्री मृगराजेंद्र गंगणे वहाँ के स्थानिक राष्ट्र-सेवादल के कार्यकर्ता हैं। उनके गाँव के इर्दगिर्द जमगा और कणमस गाँव के मुखिया ग्रामदान-विचार समझ गये हैं। अगस्त में यहीं के ७-८ गाँवों में सघन प्रचार करना तय हुआ। इसी तरह की परिस्थिति शुरपुर तालुके में कोड़ेकल खादी-केंद्र के इर्दगिर्द है। वहाँ के लोकसेवक श्री कृष्णमाचारी की निगरानी में ता. २४-२५ जुलाई को ग्रामदानी शिविर हुआ और अब पदयात्रा हो रही है।

—**उरुळीकांचन (पुणे)** के निसर्गोपचार-आश्रम के श्री भोसलेजी ने भूदान संबंधी एक फिल्म तैयार की है। उसमें मंगरौठ की कहानी, विनोबा-पदयात्रा के पावन प्रसंग व भूदान की भूमिका का चित्रीकरण किया गया है।

—सेवाग्राम की नयी तालीम-तज्ञ श्रीमती शांताबाई नारुळकर को **उस्मानाबाद** जिले के निवेदक के स्थान पर नियुक्त किया गया।

—**चांदा** जिले के कार्यकर्ता वरोड़ा तालुका के, भद्रावती, वरोड़ा और चिमूर क्षेत्र में पाँच-पाँच कार्यकर्ताओं की टोलियाँ बना कर ग्रामदान, साहित्य-प्रचार कर रहे हैं।

www.vinoba.in

ग्रामदान की गंगा में–

—श्री बाबा राघवदासजी की यात्रा में निमाड़ जिले में १ तथा इन्दौर जिले के बीजलपुर मुकाम पर ३ छोटे गाँव ग्रामदान में प्राप्त हुए।

—बंगलोर जिले में २३ घरों का 'रामसागर' गाँव ग्रामदान में मिला। सब हरिजन परिवार हैं। लकड़ी काट कर बेचने का काम ये लोग करते हैं।

—बनासकांठा जिले (गुजरात) में इश्वाणी गाँव ग्रामदान में मिला।

—जुलाई अंत तक प्राप्त समाचार के अनुसार कुछ प्रदेशों की कुल ग्रामदान-संख्या इस तरह है। उड़ीसा १८४७, उत्तर प्रदेश १०, केरल १५१, बिहार ९७, महाराष्ट्र १९४, गुजरात १८, तमिलनाड़ २२३, मध्यप्रदेश २६, राजस्थान १४।

—१५ अगस्त से ३० अगस्त तक गुजरात के ग्रामदानी गाँवों के सौ भाई-बहनों की एक "ग्रामदानी टोली" निकलेगी। इसमें आश्रम के कार्यकर्ता एवं भूदान-सेवक भी शरीक होंगे। टोली की अगुआई ग्रामदानी भाई करेंगे। इस ग्रामदानी टोली का उद्देश्य है, लोकशक्ति जाग्रत करना और अहिंसक अन्वेषण के अंत में आज जो आखरी हथियार 'ग्रामदान' हमारे हाथ आया है, उसके द्वारा भूमिहीनता और मालकियत मिटाना। तीन तहसीलों की डेढ़ सौ गाँवों की यात्रा होगी। आज जब कि खेती का मौसम चल रहा है, लोग संत का संदेश गाँव-गाँव ले जायेंगे। नये ग्रामदान मिलने की भी संभावना है।

—श्री रविशंकर महाराज की यात्रा की फलश्रुति: भूदान ५२ बीघा, संपत्तिदान ७३७), भूमि-वितरण किया ६४ बीघा, ३७॥) की साहित्य-बिक्री हुई।

—१५ अगस्त १९५७ से अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़ जिलों के कुछ भूदानी कार्यकर्ता ग्रामदान-पदयात्रा के एक अखंड कार्यक्रम का पुष्कर में सूत्रपात कर रहे हैं। कार्यक्रम का समारंभ श्री धीरेन्द्र मजूमदार द्वारा पुष्कर में होगा। पदयात्रा २८ अगस्त से प्रारंभ होगी और अजमेर जिले की किशनगढ़ और ककड़ी तहसील, भीलवाड़ा जिले की शाहपुरा, जहानपुर, माण्डलगढ़, कोटड़ी तहसील तथा चित्तौड़ जिले की वेगूँ तहसील के गाँवों से होते हुए १२ फरवरी १९५८ को समाप्त होगी। पुष्कर ही में यात्रा के पूर्व पंचदिवसीय कार्यकर्ता-संमेलन भी होगा। अंतिम दो दिनों में वे लोग भी भाग लेने को आमन्त्रित हैं कि जो इस आन्दोलन से सक्रिय सहानुभूति रखते हैं, विशेषतः उन तहसीलों के कि जहाँ उक्त पदयात्रा जाने वाली है। १६ से २६ अगस्त तक वहीं पुष्कर में अखंड पदयात्रियों का एक साधना-शिविर भी चलेगा।

—बंबई में ३० जून से २८ जुलाई तक ग्रामीण-संघों की ४३ सभाएँ हुईं। रत्नागिरी जिले के परिवारों से ५०० कार्यकर्ता मिले। १५००) की साहित्य-बिक्री हुई। ता० १५ जुलाई को माड़बन गाँव के ग्रामीणों की सभा में कहा गया कि हम माड़बन के ग्रामदान के बारे में सोच ही रहे थे। आप आये सो ठीक ही हुआ। अब हमने संकल्प किया कि माड़बन का ग्रामदान किया जाय।

—बंबई प्रदेश के राष्ट्र-सेवा-दल की बैठक ता. १२, १३ और १४ जुलाई को पूना में हुई। चुनाव समाप्त होने पर अपनी सारी शक्ति भूदान-कार्य पर लगाने का पहले ही दल ने तय किया था। भूदान-कार्य में हाथ बटाने की दृष्टि से साल भर सेवा-दल के भूदान पद यात्री-दल ने प्रचार-कार्य भी किया था। गत अप्रैल में भी सेवा-दल के कार्यकर्ताओं ने कुछ काम किया है।

७ अक्टूबर '५७ को श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे की ६१वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर सेवा-दल की ओर से दस दिन का कार्यक्रम तय किया गया है। दो दिन शिविर, साथ-साथ श्रमदान-कार्य और सात दिन पदयात्रा करने की योजना बनी है। ७ अक्टूबर को शहरों में भूदान-संबंधी चर्चा-गोष्ठी होगी। **श्री विनोबाजी ने अपेक्षा व्यक्त की है कि श्री अण्णासाहब की ६१ वीं वर्षगाठ के निमित्त महाराष्ट्र में ग्रामदान-कार्य की जिम्मेवारी लेने वाले साठ कार्यकर्ता तैयार हों।** इसके लिए सेवादल के पाँच सदस्यों की एक समिति बनी है। महाराष्ट्र के ग्रामदानी गाँवों में नवनिर्माण-कार्य में सेवादल विशेष रूप से हिस्सा लेगा।

श्री एस. एम. जोशीजी ने सुझाया कि अण्णासाहब की वर्षगाँठ के निमित्त ग्रामदान में गाँव प्राप्त करने का कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण मान कर पदयात्राओं की योजना की जाय।

सूचनाएँ :

मैसूर में ग्रामदान-सम्मेलन

श्री विनोबाजी अपनी भूदान-पदयात्रा के सिलसिले में ता० २४ अगस्त '५७ को मैसूर राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। केरल राज्य में ता० १८ अप्रैल '५७ को श्री विनोबाजी ने प्रवेश किया था। इस तरह केरल में उनकी पदयात्रा १८ सप्ताह या ४ महीने से कुछ अधिक दिन रहेगी। मैसूर शहर में २१ सितंबर '५७ को उनके पहुँचने की अपेक्षा है। उस समय वहाँ पर भारत के मुख्य-मुख्य नेताओं का एक सम्मेलन ग्रामदान-आन्दोलन को विशेष गति देने की दृष्टि से अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ आयोजित कर रहा है।

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद व श्री जवाहरलाल नेहरू इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं।

सर्व-सेवा-संघ, खादीग्राम —— —सिद्धराज ढड्ढा, सहमन्त्री

सर्वोदय-स्वाध्याय-शिविर

एक सर्वोदय-स्वाध्याय-शिविर मुंगेर में १ सितंबर से ६ सितंबर तक होगा। ३० शिविरार्थियों के निवास और भोजन का प्रबंध निधि की ओर से होगा। यात्रा-व्यय शिविरार्थियों को करना होगा। २० अगस्त तक निम्न पते पर आवेदन करें।

गांधी-स्मारक-निधि, नेशनल हॉल, पटना ३ —रमावल्लभ चतुर्वेदी

प्रकाशन-समाचार

अ० भा० खादी-ग्रामोद्योग-कमीशन तथा खादी की भिन्न-भिन्न संस्थाओं की ओर से ता० १५ अगस्त '५७ से गांधी-जयंती तक खादी पर चालू तीन आना रिबेट के अलावा विशेष कमीशन दिया जायेगा। उस कमीशन में से एक आना कमीशन सर्वोदय एवं भूदान-साहित्य के रूप में दिये जाने की बात है। इसकी अधिकृत सूचना अपनी-अपनी संस्थाओं की ओर से प्राप्त होगी ही। इस अवसर पर खादी-संस्थाओं से अपेक्षा है कि भूदान एवं ग्रामदान-आंदोलन को ख्याल में रख कर (१) भूदान-आरोहण, (२) श्रमदान, (३) संपत्तिदान, (४) ग्रामदान और (५) व्यवहार-शुद्धि–इन पाँच किताबों का विशेष रूप से प्रचार करें। साथ-साथ "गीता-प्रवचन", "शिक्षण-विचार", "भूदान-गंगा" (पाँच खंडों में), "सर्वोदय-दर्शन", "भूदान-गंगोत्री" एवं सेट नं० ३ तथा अन्य किताबों का भरपूर स्टॉक भंडार में रखें, ताकि ग्राहकों को साहित्य के चुनाव में सुविधा रहे। १५ अगस्त का नया सूचीपत्र छपा है, जिसमें सर्व-सेवा-संघ के प्रकाशनों के साथ नवजीवन और सस्ता-साहित्य-मंडल के साहित्य की भी सूची दी गयी है। सर्वोदय-साहित्य के सेटों की विस्तृत जानकारी आगामी अंक में प्राप्त होगी।

—संचालक, सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

—श्री विनोबाजी का और श्री वल्लभस्वामी का डाक-तार का पता : मार्फत : श्री श्यामजी सुंदरदास, कोलीकोड़ (केरल) KOZHIIKODE–1. KERAL

विषय-सूची

१	आलोचना की मशाल	दादा धर्माधिकारी	१
२	आज का बोगस जनतंत्र !	विनोबा	३
३	प्रेम की बिजली प्रकट करनी है !	,,	४
४	'अनुरोधी' और 'प्रतिरोधी' प्रेम	,,	४
५	आदर्श शिक्षण किसे कहते हैं ?	,,	५
६	शांति-सेना की ताकत 'सम्मति-दान' से बढ़ेगी !	,,	६
७	खून करने का ठेका !	काका कालेलकर	६
८	लोकमान्य की परंपरा !	दादा धर्माधिकारी	७
९	ग्रामदान के बाद	धीरेंद्र मजूमदार	७
१०	सरकारें कैसे समाप्त होंगी ?	विनोबा	८
११	केरल की क्रांति-यात्रा से–	महादेवी	९
१२	हरिजन-समस्या का सही हल	विनोबा	९
१३	केरल-यात्रा से–	गोविंदन्	१०
१३	बिहार के भूवितरण-अभियान का विवरण	——	१०
१४	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण, सूचनाएँ आदि	——	११-१२

सिद्धराज ढड्ढा, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव-भूषण-प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी; टे० नं० १२८५।

www.vinoba.in